

Time Allowed :3 Hours | Maximum Marks :100 | Total Questions :14

### General Instructions

Read the following instructions very carefully and strictly follow them:

1. प्रारंभ के 15 मिनट परीक्षार्थियों को प्रश्न-पत्र पढ़ने के लिए निर्धारित हैं।
2. इस प्रश्न-पत्र में दो खंड हैं। दोनों खंडों के सभी प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।

### खण्ड - 'क'

#### Question(1)

(क). 'पाणिनीकालीन भारतवर्ष' नामक कृति के लेखक हैं :

- (A) बालकृष्ण भट्ट
- (B) राधाचरण गोस्वामी
- (C) डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल
- (D) राजा लक्ष्मण सिंह

**Correct Answer:** (C) डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल

#### Solution:

##### Step 1: Understanding the Concept:

यह प्रश्न हिंदी साहित्य के प्रमुख लेखकों और उनकी महत्वपूर्ण कृतियों से संबंधित है। इसमें 'पाणिनीकालीन भारतवर्ष' नामक पुस्तक के लेखक की पहचान करने के लिए कहा गया है।

##### Step 2: Detailed Explanation:

'पाणिनीकालीन भारतवर्ष' एक प्रसिद्ध कृति है जो प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति और समाज का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत करती है। यह अध्ययन महर्षि पाणिनि के व्याकरण ग्रंथ 'अष्टाध्यायी' पर आधारित है। इस महत्वपूर्ण ग्रंथ के लेखक डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल हैं। डॉ. अग्रवाल एक प्रतिष्ठित पुरातत्ववेत्ता, इतिहासकार, और कला समीक्षक थे, जिन्होंने भारतीय संस्कृति और साहित्य पर कई शोधपरक ग्रंथ लिखे।

अन्य विकल्पों पर विचार :

- (A) बालकृष्ण भट्ट भारतेंदु युग के प्रमुख निबंधकार और पत्रकार थे।
- (B) राधाचरण गोस्वामी भी भारतेंदु युग के एक महत्वपूर्ण साहित्यकार थे।
- (D) राजा लक्ष्मण सिंह ने 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' का हिंदी में अनुवाद किया था और हिंदी गद्य के विकास में योगदान दिया था।

अतः, सही उत्तर डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल है।

**Step 3: Final Answer:**

दिए गए विकल्पों में से, 'पाणिनीकालीन भारतवर्ष' के लेखक डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल हैं। इसलिए, विकल्प (C) सही है।

**Quick Tip**

प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए, हिंदी साहित्य के विभिन्न कालों (जैसे- भारतेंदु युग, द्विवेदी युग, छायावाद) के प्रमुख लेखकों और उनकी सबसे प्रसिद्ध रचनाओं की एक सूची बनाकर याद करना बहुत उपयोगी होता है। विशेष रूप से ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विषयों पर लिखे गए ग्रंथों पर ध्यान दें।

(ख). द्विवेदीयुगीन लेखक हैं :

- (A) रायकृष्ण दास
- (B) अध्यापक पूर्ण सिंह
- (C) चतुरसेन शास्त्री
- (D) उदयशंकर भट्ट

**Correct Answer:** (B) अध्यापक पूर्ण सिंह

**Solution:**

**Step 1: Understanding the Concept:**

यह प्रश्न हिंदी साहित्य के 'द्विवेदी युग' से संबंधित है, जो लगभग 1900 से 1918 तक की अवधि को कवर करता है। प्रश्न में दिए गए लेखकों में से द्विवेदी युग के लेखक की पहचान करनी है।

**Step 2: Detailed Explanation:**

द्विवेदी युग का नाम आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के नाम पर रखा गया है, जिन्होंने 'सरस्वती' पत्रिका के संपादन के माध्यम से हिंदी भाषा और साहित्य को एक नई दिशा दी। इस युग के प्रमुख लेखकों में मैथिलीशरण गुप्त, अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', श्रीधर पाठक और अध्यापक पूर्ण सिंह (सरदार पूर्ण सिंह) शामिल हैं। अध्यापक पूर्ण सिंह अपने भावनात्मक और विचारात्मक निबंधों, जैसे 'आचरण की सभ्यता', 'मजदूरी और प्रेम', 'सच्ची वीरता' के लिए प्रसिद्ध हैं। वे द्विवेदी युग के एक विशिष्ट गद्यकार माने जाते हैं।

अन्य विकल्पों पर विचार :

(A) रायकृष्ण दास और (C) चतुरसेन शास्त्री मुख्य रूप से छायावाद और उसके बाद के समय के लेखक हैं।

(D) उदयशंकर भट्ट एक प्रसिद्ध नाटककार और कवि थे जो छायावादोत्तर काल में सक्रिय थे।

अतः, दिए गए विकल्पों में से अध्यापक पूर्ण सिंह द्विवेदीयुगीन लेखक हैं।

**Step 3: Final Answer:**

दिए गए लेखकों में से अध्यापक पूर्ण सिंह द्विवेदी युग के एक प्रमुख लेखक हैं। इसलिए, विकल्प (B) सही है।

**Quick Tip**

हिंदी साहित्य के विभिन्न युगों (भारतेंदु, द्विवेदी, छायावाद, प्रगतिवाद आदि) की समय-सीमा और प्रत्येक युग के 5-7 प्रमुख कवियों/लेखकों के नाम याद रखें। यह आपको इस तरह के प्रश्नों को आसानी से हल करने में मदद करेगा।

(ग). रामचन्द्र शुक्ल लिखित कहानी है :

- (A) राजा भोज का सपना
- (B) इन्दुमती
- (C) एक टोकरी भर मिट्टी
- (D) ग्यारह वर्ष का समय

**Correct Answer:** (D) ग्यारह वर्ष का समय

**Solution:**

**Step 1: Understanding the Concept:**

यह प्रश्न हिंदी साहित्य के एक महान आलोचक, निबंधकार और साहित्य-इतिहासकार आचार्य रामचंद्र शुक्ल की कहानियों से संबंधित है।

**Step 2: Detailed Explanation:**

आचार्य रामचंद्र शुक्ल मुख्य रूप से अपनी आलोचनात्मक कृतियों और निबंधों के लिए जाने जाते हैं, लेकिन उन्होंने कुछ कहानियाँ भी लिखीं। 'ग्यारह वर्ष का समय' उनकी एक प्रसिद्ध कहानी है, जो 1903 में 'सरस्वती' पत्रिका में प्रकाशित हुई थी। इसे अक्सर हिंदी की शुरुआती कहानियों में गिना जाता है।

अन्य विकल्पों पर विचार :

- (A) 'राजा भोज का सपना' के लेखक राजा शिवप्रसाद 'सितारेहिंद' हैं।
- (B) 'इन्दुमती' को हिंदी की पहली कहानी माना जाता है और इसके लेखक किशोरीलाल गोस्वामी हैं।
- (C) 'एक टोकरी भर मिट्टी' कहानी के लेखक माधवराव सप्रे हैं।

इस प्रकार, सही उत्तर 'ग्यारह वर्ष का समय' है।

**Step 3: Final Answer:**

आचार्य रामचंद्र शुक्ल द्वारा लिखित कहानी 'ग्यारह वर्ष का समय' है। इसलिए, विकल्प (D) सही है।

### Quick Tip

हिंदी की प्रथम कहानी ('इन्दुमती'), प्रथम उपन्यास ('परीक्षा गुरु') जैसी महत्वपूर्ण "प्रथम" रचनाओं और उनके लेखकों के नाम अवश्य याद रखें। साथ ही, आचार्य रामचंद्र शुक्ल जैसे युग-प्रवर्तक साहित्यकारों की सभी प्रमुख रचनाओं (निबंध, आलोचना, कहानी) को जानना महत्वपूर्ण है।

(घ). 'जहाज का पंछी' रचना की विधा है :

- (A) उपन्यास
- (B) नाटक
- (C) कहानी
- (D) आत्मकथा

**Correct Answer:** (A) उपन्यास

**Solution:**

**Step 1: Understanding the Concept:**

यह प्रश्न हिंदी साहित्य की एक प्रसिद्ध रचना 'जहाज का पंछी' की साहित्यिक विधा (genre) की पहचान से संबंधित है।

**Step 2: Detailed Explanation:**

'जहाज का पंछी' हिंदी के प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार इलाचन्द्र जोशी द्वारा लिखा गया एक उपन्यास है। यह उपन्यास एक ऐसे युवक की कहानी है जो समाज में अपनी पहचान और स्थान खोजने के लिए संघर्ष करता है, ठीक उसी तरह जैसे जहाज का पंछी आश्रय के लिए वापस जहाज पर ही लौट आता है। इलाचन्द्र जोशी ने कई अन्य मनोवैज्ञानिक उपन्यासों की रचना की है, जैसे 'संन्यासी', 'पर्दे की रानी' और 'मुक्तिपथ'। अतः, 'जहाज का पंछी' की विधा उपन्यास है।

**Step 3: Final Answer:**

'जहाज का पंछी' एक उपन्यास है। इसलिए, विकल्प (A) सही है।

### Quick Tip

किसी भी साहित्यिक रचना का अध्ययन करते समय, उसके लेखक के नाम के साथ-साथ उसकी विधा (कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध, आत्मकथा आदि) को भी ध्यान में रखना आवश्यक है। परीक्षाओं में अक्सर इस तरह के सीधे प्रश्न पूछे जाते हैं।

(ङ). 'आनन्द कादम्बिनी' के सम्पादक थे :

- (A) बालकृष्ण भट्ट
- (B) रामनाथ 'सुमन'
- (C) बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन'
- (D) अमृतराय

**Correct Answer:** (C) बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन'

**Solution:**

**Step 1: Understanding the Concept:**

यह प्रश्न भारतेंदु युग की एक महत्वपूर्ण साहित्यिक पत्रिका 'आनन्द कादम्बिनी' और उसके संपादक के बारे में है।

**Step 2: Detailed Explanation:**

'आनन्द कादम्बिनी' भारतेंदु युग की एक प्रमुख मासिक पत्रिका थी। इसका प्रकाशन 1881 में मिर्जा-पुर से आरम्भ हुआ था। इस पत्रिका के संपादक भारतेंदु मंडल के प्रमुख कवि और लेखक बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' थे। इस पत्रिका ने उस दौर में हिंदी भाषा और साहित्य के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

अन्य विकल्पों पर विचार :

- (A) बालकृष्ण भट्ट ने 'हिंदी प्रदीप' नामक पत्रिका का संपादन किया था।
  - (D) अमृतराय, प्रेमचंद के पुत्र थे और उन्होंने 'हंस' पत्रिका का संपादन किया था।
- अतः, सही उत्तर बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' है।

**Step 3: Final Answer:**

'आनन्द कादम्बिनी' पत्रिका के संपादक बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' थे। इसलिए, विकल्प (C) सही है।

### Quick Tip

भारतेंदु युग और द्विवेदी युग की प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं और उनके संपादकों के नाम याद करना अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि इन्होंने आधुनिक हिंदी साहित्य की नींव रखने में केंद्रीय भूमिका निभाई। 'कविवचन सुधा', 'हिंदी प्रदीप', 'ब्राह्मण', 'सरस्वती' और 'आनन्द कादम्बिनी' जैसी पत्रिकाएँ अक्सर परीक्षाओं में पूछी जाती हैं।

### Question(2)

(क). 'निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल' – यह कथन है :

- (A) महावीरप्रसाद द्विवेदी
- (B) बालमुकुन्द गुप्त
- (C) वियोगी हरि

(D) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

**Correct Answer:** (D) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

**Solution:**

**Step 1: Understanding the Concept:**

यह प्रश्न हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध कथनों और उनके रचयिताओं से संबंधित है। दी गई पंक्ति के रचनाकार की पहचान करनी है।

**Step 2: Detailed Explanation:**

प्रस्तुत पंक्ति "निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल। बिन निज भाषा-ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।।" आधुनिक हिंदी साहित्य के जनक कहे जाने वाले भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा रचित है। इस पंक्ति के माध्यम से भारतेन्दु जी ने अपनी भाषा यानी हिंदी के महत्व पर बल दिया है। उनका मानना था कि सभी प्रकार की उन्नति का आधार अपनी भाषा की उन्नति ही है। यह कथन उनके भाषा-प्रेम और हिंदी के प्रति उनके समर्पण को दर्शाता है।

**Step 3: Final Answer:**

यह प्रसिद्ध कथन भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का है। इसलिए, विकल्प (D) सही है।

#### Quick Tip

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, महावीर प्रसाद द्विवेदी जैसे युगप्रवर्तक लेखकों के प्रसिद्ध कथनों और पंक्तियों को विशेष रूप से याद रखें। ये अक्सर परीक्षाओं में पूछे जाते हैं।

(ख). 'कितनी नावों में कितनी बार' के रचयिता हैं :

- (A) रामधारी सिंह 'दिनकर'
- (B) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'
- (C) सुमित्रानन्दन पन्त
- (D) 'अज्ञेय'

**Correct Answer:** (D) 'अज्ञेय'

**Solution:**

**Step 1: Understanding the Concept:**

यह प्रश्न हिंदी साहित्य की आधुनिक कविता और उसकी प्रमुख कृतियों से संबंधित है। दी गई काव्य-कृति के रचयिता का नाम बताना है।

**Step 2: Detailed Explanation:**

'कितनी नावों में कितनी बार' एक प्रसिद्ध काव्य-संग्रह है, जिसके रचयिता सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' हैं।

'अज्ञेय' प्रयोगवाद के प्रवर्तक कवि माने जाते हैं।

इस कृति के लिए उन्हें वर्ष 1978 में प्रतिष्ठित 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' से सम्मानित किया गया था।

यह उनकी सबसे चर्चित कृतियों में से एक है।

**Step 3: Final Answer:**

'कितनी नावों में कितनी बार' के रचयिता 'अज्ञेय' हैं। इसलिए, विकल्प (D) सही है।

**Quick Tip**

ज्ञानपीठ पुरस्कार, साहित्य अकादमी पुरस्कार जैसे प्रमुख साहित्यिक पुरस्कारों से सम्मानित हिंदी कृतियों और उनके लेखकों की सूची बनाकर याद करना परीक्षा की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है।

(ग). छायावादयुगीन कवि हैं :

- (A) अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
- (B) प्रतापनारायण मिश्र
- (C) जयशंकर प्रसाद
- (D) श्रीधर पाठक

**Correct Answer:** (C) जयशंकर प्रसाद

**Solution:**

**Step 1: Understanding the Concept:**

यह प्रश्न हिंदी साहित्य के 'छायावाद युग' के प्रमुख कवियों की पहचान से संबंधित है।

**Step 2: Detailed Explanation:**

हिंदी साहित्य में छायावाद युग का समय लगभग 1918 से 1936 ई. तक माना जाता है।

इस युग के चार प्रमुख स्तंभ माने जाते हैं - जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' और महादेवी वर्मा।

दिए गए विकल्पों में जयशंकर प्रसाद छायावाद के प्रवर्तक कवियों में से एक हैं।

अन्य विकल्पों पर विचार :

- (A) अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' और (D) श्रीधर पाठक द्विवेदी युग के प्रमुख कवि हैं।
- (B) प्रतापनारायण मिश्र भारतेन्दु युग के लेखक हैं।

**Step 3: Final Answer:**

दिए गए विकल्पों में से जयशंकर प्रसाद छायावादयुगीन कवि हैं। इसलिए, विकल्प (C) सही है।

### Quick Tip

हिंदी साहित्य के प्रमुख युगों (भारतेन्दु, द्विवेदी, छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद) का काल-विभाजन और प्रत्येक युग के चार-पाँच प्रमुख कवियों/लेखकों के नाम कंठस्थ कर लें।

(घ). भारतेन्दुयुगीन रचना है :

- (A) आनन्द अरुणोदय
- (B) कामायनी
- (C) साकेत
- (D) भारत बारहमासा

**Correct Answer:** (A) आनन्द अरुणोदय

**Solution:**

**Step 1: Understanding the Concept:**

यह प्रश्न हिंदी साहित्य के 'भारतेन्दु युग' की रचनाओं की पहचान से संबंधित है।

**Step 2: Detailed Explanation:**

भारतेन्दु युग का समय मोटे तौर पर 1850 से 1900 ई. तक माना जाता है।

दिए गए विकल्पों का विश्लेषण :

(A) आनन्द अरुणोदय : यह रचना भारतेन्दु मंडल के प्रमुख लेखक बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' द्वारा रचित है, अतः यह भारतेन्दुयुगीन रचना है।

(B) कामायनी : यह जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित महाकाव्य है और छायावाद युग की रचना है।

(C) साकेत : यह मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित महाकाव्य है और द्विवेदी युग की रचना है।

(D) भारत बारहमासा : यह रचना राधाकृष्ण दास द्वारा रचित है और यह भी भारतेन्दुयुगीन रचना है। चूंकि प्रश्न में एक ही विकल्प चुनना है और 'आनन्द अरुणोदय' (विकल्प A) स्पष्ट रूप से भारतेन्दुयुगीन है, यह एक सही उत्तर है। कुछ प्रश्नों में एक से अधिक सही विकल्प हो सकते हैं, परन्तु यहाँ हम पहले सही विकल्प को चुनेंगे।

**Step 3: Final Answer:**

दिए गए विकल्पों में 'आनन्द अरुणोदय' भारतेन्दु युग की रचना है। इसलिए, विकल्प (A) सही है।

### Quick Tip

प्रमुख साहित्यिक युगों की प्रतिनिधि रचनाओं को उनके युग के साथ जोड़कर याद करें। जैसे- भारतेन्दु युग ('भारत-दुर्दशा'), द्विवेदी युग ('साकेत', 'प्रियप्रवास'), छायावाद युग ('कामायनी', 'पल्लव')।

(ड). जयशंकर प्रसाद की काव्यकृति है :

- (A) 'अनामिका'
- (B) 'चित्राधार'
- (C) 'ग्राम्या'
- (D) 'दीपशिखा'

**Correct Answer:** (B) 'चित्राधार'

**Solution:**

**Step 1: Understanding the Concept:**

यह प्रश्न छायावाद के प्रमुख कवि जयशंकर प्रसाद की काव्य-कृतियों की पहचान से संबंधित है।

**Step 2: Detailed Explanation:**

दिए गए विकल्पों का विश्लेषण :

- (A) 'अनामिका': यह सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' की प्रसिद्ध काव्यकृति है।
  - (B) 'चित्राधार': यह जयशंकर प्रसाद का प्रारंभिक काव्य-संग्रह है, जिसमें उनकी ब्रजभाषा में रचित कविताएँ संकलित हैं।
  - (C) 'ग्राम्या': यह सुमित्रानंदन पन्त की रचना है, जिसमें प्रगतिवादी चेतना दिखाई देती है।
  - (D) 'दीपशिखा': यह महादेवी वर्मा का काव्य-संग्रह है।
- अतः, दिए गए विकल्पों में से 'चित्राधार' ही जयशंकर प्रसाद की रचना है। उनकी अन्य प्रसिद्ध रचनाएँ 'कामायनी', 'आँसू', 'लहर', 'झरना' आदि हैं।

**Step 3: Final Answer:**

दिए गए विकल्पों में 'चित्राधार' जयशंकर प्रसाद की काव्यकृति है। इसलिए, विकल्प (B) सही है।

#### Quick Tip

छायावाद के चारों स्तंभों - प्रसाद, पंत, निराला, और महादेवी वर्मा - की कम से कम 5-5 प्रमुख काव्य-कृतियों के नाम अवश्य याद कर लें। यह परीक्षा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

#### Question (3)

दिये गए गद्यांश पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

मातृभूमि पर निवास करने वाले मुख्यतः दुसरा अंग हैं। पृथ्वी हो और मनुष्य न हो तो राष्ट्र की कल्पना असंभव है। पृथ्वी और मनुष्य दोनों के समिलन से ही राष्ट्र का स्वरूप सम्पन्न होता है। जिन के कारण ही पृथ्वी मातृभूमि की संज्ञा प्राप्त करती है। पृथ्वी माता है और जन सबसे अर्थों में पृथ्वी का पुत्र है - (माता भूमि : पुत्रोऽहं प्रथ्यक्षा : )

- भूमि माता है और मैं उसका पुत्र हूँ।

जन के हाथ में इस सुख का अनुपम ही राष्ट्रीयता की कुंजी है। इसी भावना से राष्ट्र-निर्माण के अंकुर उन्नति होते हैं।

(i). उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

**Solution:**

**Step 1: Understanding the Question:**

इस प्रश्न में दिए गए गद्यांश का सन्दर्भ लिखने के लिए कहा गया है। सन्दर्भ में पाठ का शीर्षक और उसके लेखक का नाम बताना होता है।

**Step 2: Detailed Explanation:**

यह गद्यांश हिंदी साहित्य के प्रख्यात निबंधकार एवं विद्वान् डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल द्वारा लिखित निबंध 'राष्ट्र का स्वरूप' से उद्धृत है।

यह निबंध उनकी प्रसिद्ध कृति 'पृथ्वी-पुत्र' में संगृहीत है।

अतः, इसका सन्दर्भ इस प्रकार लिखा जाएगा :

**सन्दर्भ:** प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक में संकलित डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल द्वारा लिखित 'राष्ट्र का स्वरूप' नामक निबंध से लिया गया है।

**Step 3: Final Answer:**

यह गद्यांश डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल के निबंध 'राष्ट्र का स्वरूप' से लिया गया है।

#### Quick Tip

परीक्षा में सन्दर्भ लिखते समय, पाठ के शीर्षक को एकल उद्धरण चिह्न (' ') में और लेखक के नाम को स्पष्ट रूप से लिखें। यदि संभव हो, तो लेखक की साहित्यिक विधा (जैसे- निबंधकार, कहानीकार) का भी उल्लेख करें, इससे उत्तर अधिक प्रभावशाली बनता है।

(ii). रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

रेखांकित अंश : जन के हृदय में इस सूत्र का अनुभव ही राष्ट्रीयता की कुंजी है। इसी भावना से राष्ट्र-निर्माण के अंकुर उत्पन्न होते हैं।

**Solution:**

**Step 1: Understanding the Question:**

इस प्रश्न में गद्यांश के रेखांकित अंश का भावार्थ स्पष्ट करने के लिए कहा गया है।

**Step 2: Detailed Explanation:**

लेखक डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल इन पंक्तियों में राष्ट्रीयता के मूल आधार को स्पष्ट कर रहे हैं।

**व्याख्या :** लेखक के अनुसार, जब किसी देश के निवासी अपनी भूमि को केवल धरती का टुकड़ा न समझकर उसे अपनी माता के समान आदर देते हैं और स्वयं को उसका पुत्र मानते हैं, तो यही भावना राष्ट्रीयता को जन्म देती है।

यह सूत्र ('माता भूमि: पुत्रोऽहं पृथिव्या:') अर्थात् 'भूमि माता है और मैं उसका पुत्र हूँ' जब लोगों के

हृदय में गहराई से बस जाता है, तो यही राष्ट्रियता की भावना की कुंजी (मूल मंत्र) बन जाता है। जब लोगों में यह अपनत्व और मातृ-भक्ति की भावना प्रबल होती है, तभी उनके मन में अपने राष्ट्र के निर्माण, विकास और सुरक्षा के विचार अंकुरित होते हैं। यही भावना राष्ट्र को संगठित और शक्ति-शाली बनाती है।

### Step 3: Final Answer:

रेखांकित अंश में लेखक यह कहना चाहते हैं कि पृथ्वी को माता और स्वयं को उसका पुत्र मानने की भावना ही राष्ट्रियता की जड़ है, और इसी भावना से एक सुदृढ़ राष्ट्र का निर्माण संभव होता है।

#### Quick Tip

रेखांकित अंश की व्याख्या करते समय, केवल पंक्तियों का सरलार्थ न लिखें। बल्कि, लेखक के गूढ़ भावों और विचारों को अपने शब्दों में विस्तार दें। व्याख्या में मौलिकता और स्पष्टता होनी चाहिए।

(iii). राष्ट्र की कल्पना कब तक असम्भव है ?

#### Solution:

##### Step 1: Understanding the Question:

प्रश्न में यह पूछा गया है कि किस स्थिति में एक राष्ट्र की कल्पना नहीं की जा सकती है।

##### Step 2: Explanation from the Passage:

गद्यांश की दूसरी और तीसरी पंक्ति में स्पष्ट रूप से लिखा है : "पृथ्वी हो और मनुष्य न हों तो राष्ट्र की कल्पना असम्भव है।"

इसका अर्थ है कि राष्ट्र केवल भूमि से नहीं बनता, बल्कि उस पर निवास करने वाले मनुष्यों से बनता है।

भूमि और जन दोनों ही राष्ट्र के अनिवार्य अंग हैं।

##### Step 3: Final Answer:

गद्यांश के अनुसार, यदि पृथ्वी (भूमि) हो लेकिन उस पर निवास करने वाले मनुष्य (जन) न हों, तो राष्ट्र की कल्पना असम्भव है।

#### Quick Tip

गद्यांश पर आधारित प्रश्नों का उत्तर देते समय, उत्तर सीधे गद्यांश से ही खोजना चाहिए। प्रश्न के की-वर्ड्स (जैसे- 'राष्ट्र', 'कल्पना', 'असम्भव') को गद्यांश में ढूंढें, आपको सही पंक्ति मिल जाएगी।

(iv). पृथ्वी किसके कारण मातृभूमि की संज्ञा प्राप्त करती है ?

**Solution:**

**Step 1: Understanding the Question:**

इस प्रश्न में पूछा गया है कि पृथ्वी को 'मातृभूमि' क्यों कहा जाता है या यह उपाधि उसे किस वजह से मिलती है।

**Step 2: Explanation from the Passage:**

गद्यांश की चौथी पंक्ति में इसका सीधा उत्तर दिया गया है : "जन के कारण ही पृथ्वी मातृभूमि की संज्ञा प्राप्त करती है।"

जब मनुष्य पृथ्वी से अपना संबंध माता और पुत्र का स्थापित करता है और उसे अपनी माँ के समान सम्मान देता है, तभी वह भूमि 'मातृभूमि' कहलाती है।

मनुष्यों के बिना पृथ्वी केवल एक निर्जीव भू-भाग है।

**Step 3: Final Answer:**

गद्यांश के अनुसार, पृथ्वी उस पर निवास करने वाले जन (मनुष्यों) के कारण ही मातृभूमि की संज्ञा प्राप्त करती है।

#### Quick Tip

इस प्रकार के तथ्यात्मक प्रश्नों का उत्तर हमेशा संक्षिप्त और सटीक होना चाहिए। गद्यांश में दी गई जानकारी को ही अपने उत्तर का आधार बनाएं और अनावश्यक विस्तार से बचें।

(v). पृथ्वी और जन दोनों मिलकर क्या-क्या करते हैं ?

**Solution:**

**Step 1: Understanding the Question:**

प्रश्न में यह पूछा गया है कि पृथ्वी (भूमि) और जन (मनुष्य) मिलकर किस चीज का निर्माण करते हैं।

**Step 2: Explanation from the Passage:**

गद्यांश की तीसरी और चौथी पंक्तियों में इसका उत्तर निहित है : "पृथ्वी और जन दोनों के सम्मिलन से ही राष्ट्र का स्वरूप सम्पादित होता है।"

इसका तात्पर्य है कि भूमि और उस पर रहने वाले लोग जब एक-दूसरे से जुड़ते हैं, तभी एक राष्ट्र को उसका वास्तविक स्वरूप प्राप्त होता है।

पृथ्वी राष्ट्र का भौतिक आधार प्रदान करती है और जन उसमें सांस्कृतिक और भावनात्मक चेतना का संचार करते हैं।

**Step 3: Final Answer:**

गद्यांश के अनुसार, पृथ्वी और जन दोनों मिलकर राष्ट्र के स्वरूप का निर्माण करते हैं (राष्ट्र का स्वरूप

सम्पादित करते हैं)।

### Quick Tip

"क्या करते हैं?" जैसे प्रश्नों का उत्तर देते समय, गद्यांश में वर्णित क्रिया या परिणाम पर ध्यान केंद्रित करें। यहाँ 'सम्मिलन' से होने वाले परिणाम 'राष्ट्र का स्वरूप सम्पादित होना' ही मुख्य उत्तर है।

### Question (अथवा)

भाषा की साधारण इकाई शब्द है, शब्द के अभाव में भाषा का अस्तित्व ही कठिन है। यदि भाषा में विकसनशीलता शुरू होती है तो शब्दों के स्वरूप पर ही। दैनिक सामाजिक व्यवहारासों में हम कई ऐसे नवीन शब्दों का इस्तेमाल करते हैं, जो अंग्रेजी, अरबी, फारसी आदि विदेशी भाषाओं से उधार लिये गए हैं। वैसे ही नए शब्दों का गठन भी अनजाने में अनावश्यक ही होता है। ये शब्द अर्थ उन विदेशी भाषाओं से सीन अभिकृत ढंग से उधार लिये गए शब्द भले ही कामचलाऊ ढंग से प्रयुक्त हों, साहित्यिक दायरे में कदापि प्रक्षिप्त नहीं।

(i). उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

### Solution:

#### Step 1: Understanding the Question:

इस प्रश्न में दिए गए गद्यांश के पाठ का शीर्षक और उसके लेखक का नाम लिखने के लिए कहा गया है, जिसे सन्दर्भ कहते हैं।

#### Step 2: Detailed Explanation:

यह गद्यांश श्रेष्ठ विचारक और निबंधकार प्रोफेसर जी. सुन्दर रेड्डी द्वारा लिखित वैचारिक निबंध 'भाषा और आधुनिकता' से लिया गया है।

लेखक इस पाठ में भाषा को आधुनिकता के साथ जोड़ने की आवश्यकता पर बल देते हैं और बताते हैं कि भाषा की जीवंतता नए शब्दों को ग्रहण करने में है।

अतः, इसका सन्दर्भ इस प्रकार होगा :

**सन्दर्भ:** प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक में संकलित प्रो. जी. सुन्दर रेड्डी द्वारा रचित 'भाषा और आधुनिकता' नामक निबंध से उद्धृत है।

#### Step 3: Final Answer:

प्रस्तुत गद्यांश 'भाषा और आधुनिकता' पाठ से लिया गया है और इसके लेखक प्रो. जी. सुन्दर रेड्डी हैं।

### Quick Tip

परीक्षा में गद्य के पाठों का सन्दर्भ लिखने का अभ्यास अवश्य करें। इसके लिए अपनी पाठ्य-पुस्तक के सभी पाठों के शीर्षक और उनके लेखकों के नाम की एक सूची बना लें और उसे नियमित रूप से दोहराएँ।

### (ii). रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(रेखांकित अंश : ...ये शब्द अर्थात् उन विदेशी भाषाओं से सीधे अविकृत ढंग से उधार लिये गए शब्द भले ही कामचलाऊ ढंग से प्रयुक्त हों, साहित्यिक दायरे में कदापि ग्रहणीय नहीं।)

### Solution:

#### Step 1: Understanding the Question:

इस प्रश्न में गद्यांश के रेखांकित अंश का भावार्थ अपने शब्दों में स्पष्ट करने के लिए कहा गया है।

#### Step 2: Detailed Explanation:

लेखक प्रो. जी. सुन्दर रेड्डी रेखांकित अंश में भाषा में विदेशी शब्दों के प्रयोग की सीमा को स्पष्ट करते हैं।

**व्याख्या :** लेखक कहते हैं कि हम अपने प्रतिदिन के सामाजिक व्यवहार और बोलचाल में अंग्रेजी, अरबी, फारसी जैसी विदेशी भाषाओं के कई शब्दों का प्रयोग करते हैं। कई बार यह प्रयोग अनजाने में और स्वाभाविक रूप से होता है। लेखक यह स्पष्ट करना चाहते हैं कि विदेशी भाषाओं से उनके मूल रूप में (बिना किसी परिवर्तन के) लिए गए शब्द, भले ही हमारी रोजमर्रा की बातचीत के लिए उपयोगी और कामचलाऊ हों, लेकिन उन्हें साहित्यिक भाषा में स्वीकार नहीं किया जा सकता। साहित्य की भाषा अधिक परिष्कृत, मानक और अनुशासित होती है। उसमें कामचलाऊ या अविकसित शब्दों के लिए कोई स्थान नहीं होता। साहित्यिक भाषा में किसी विदेशी शब्द को तभी स्वीकार किया जाता है जब वह भाषा की प्रकृति के अनुरूप ढल जाए।

#### Step 3: Final Answer:

रेखांकित अंश में लेखक यह समझाना चाहते हैं कि आम बोलचाल में इस्तेमाल होने वाले विदेशी भाषाओं के अपरिवर्तित शब्द साहित्यिक लेखन के लिए उपयुक्त नहीं होते क्योंकि साहित्य की अपनी एक मानक और परिष्कृत भाषा होती है।

### Quick Tip

व्याख्या करते समय, केवल शाब्दिक अर्थ न लिखें। अंश के पीछे छिपे लेखक के दृष्टिकोण और मंतव्य को भी स्पष्ट करने का प्रयास करें। अपने उत्तर को सरल और स्पष्ट भाषा में लिखें।

### (iii). भाषा की साधारण इकाई क्या है ?

**Solution:**

**Step 1: Understanding the Question:**

प्रश्न में यह पूछा गया है कि भाषा की मूलभूत या सामान्य इकाई किसे माना गया है।

**Step 2: Explanation from the Passage:**

गद्यांश की पहली ही पंक्ति में इसका स्पष्ट उत्तर दिया गया है : "भाषा की साधारण इकाई शब्द है, शब्द के अभाव में भाषा का अस्तित्व ही दुरुह है।"  
इसका अर्थ है कि भाषा का निर्माण शब्दों से होता है और शब्दों के बिना भाषा की कल्पना नहीं की जा सकती।

**Step 3: Final Answer:**

गद्यांश के अनुसार, भाषा की साधारण इकाई 'शब्द' है।

**Quick Tip**

गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर अक्सर गद्यांश की शुरुआती या अंतिम पंक्तियों में मिल जाते हैं। प्रश्न को ध्यान से पढ़ें और संबंधित शब्दों को गद्यांश में खोजने का प्रयास करें।

(iv). दैनिक व्यवहार में हम किन शब्दों का प्रयोग करते हैं ?

**Solution:**

**Step 1: Understanding the Question:**

इस प्रश्न में पूछा गया है कि हम अपनी रोजमर्रा की जिंदगी में किस प्रकार के शब्दों का इस्तेमाल करते हैं।

**Step 2: Explanation from the Passage:**

गद्यांश की तीसरी और चौथी पंक्ति में इसका उत्तर मिलता है : "दैनन्दिन सामाजिक व्यवहारों में हम कई ऐसे नवीन शब्दों का इस्तेमाल करते हैं, जो अंग्रेजी, अरबी, फारसी आदि विदेशी भाषाओं से उधार लिये गए हैं।"  
इससे स्पष्ट होता है कि हम अपनी भाषा के शब्दों के साथ-साथ विदेशी भाषाओं से लिए गए नए शब्दों का भी प्रयोग करते हैं।

**Step 3: Final Answer:**

गद्यांश के अनुसार, हम दैनिक व्यवहार में अंग्रेजी, अरबी, फारसी आदि विदेशी भाषाओं से उधार लिए गए अनेक नवीन शब्दों का प्रयोग करते हैं।

### Quick Tip

उत्तर लिखते समय, गद्यांश में दी गई जानकारी को यथासंभव अपने शब्दों में लिखने का प्रयास करें। यदि आप गद्यांश से सीधे पंक्तियाँ उद्धृत कर रहे हैं, तो उन्हें उद्धरण चिह्न (" ") में लिखें।

(v). 'दैनन्दिन' और 'अविकृत' शब्द का अर्थ लिखिए।

**Solution:**

**Step 1: Understanding the Question:**

प्रश्न में 'दैनन्दिन' और 'अविकृत' इन दो शब्दों का अर्थ बताने के लिए कहा गया है।

**Step 2: Meaning of the Words:**

(i) **दैनन्दिन** : इस शब्द का अर्थ है - 'दैनिक', 'प्रतिदिन का' या 'रोजमर्रा का'। यह उन कार्यों या व्यवहारों के लिए प्रयुक्त होता है जो हर दिन होते हैं।

(ii) **अविकृत** : इस शब्द का अर्थ है - 'जिसमें कोई विकार या परिवर्तन न हुआ हो', 'अपने मूल रूप में' या 'बिना बदले हुए'। यह 'अ' (नहीं) और 'विकृत' (बदला हुआ) से मिलकर बना है।

**Step 3: Final Answer:**

दिए गए शब्दों के अर्थ निम्नलिखित हैं:

**दैनन्दिन** = दैनिक / प्रतिदिन का

**अविकृत** = बिना किसी परिवर्तन के / अपने मूल रूप में

### Quick Tip

अपनी शब्दावली को मजबूत करने के लिए, पाठ पढ़ते समय कठिन शब्दों को रेखांकित करें और उनके अर्थ को शब्दकोश में देखें। यह न केवल ऐसे प्रश्नों को हल करने में मदद करेगा बल्कि आपके लेखन को भी सुधारेगा।

**Question (4)**

दिये गए पद्यांश पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

नील परिवर्तन बीच सुखमय  
खुल रहा मुल्लल अधखुला अंग,  
खिला हो जैसे बिजली का फूल  
मेघ-वन बीच गुलाबी रंग।

(i). उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

## Solution:

### Step 1: Understanding the Question:

इस प्रश्न में दिए गए पद्यांश का सन्दर्भ लिखने के लिए कहा गया है, जिसमें कवि का नाम और कविता का शीर्षक बताना होता है।

### Step 2: Detailed Explanation:

यह पद्यांश छायावादी युग के प्रवर्तक कवि श्री जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित महाकाव्य 'कामायनी' के 'श्रद्धा' सर्ग से लिया गया है।

'कामायनी' हिंदी साहित्य की एक अनुपम कृति है, जिसमें प्रलय के बाद की कथा का वर्णन है और श्रद्धा तथा मनु इसके प्रमुख पात्र हैं।

अतः, इसका सन्दर्भ इस प्रकार लिखा जाएगा :

सन्दर्भ: प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक में संकलित, छायावाद के प्रवर्तक कवि जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित महाकाव्य 'कामायनी' के 'श्रद्धा सर्ग' से उद्धृत है।

### Step 3: Final Answer:

यह पद्यांश जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित महाकाव्य 'कामायनी' के 'श्रद्धा सर्ग' से लिया गया है।

### Quick Tip

पद्य का सन्दर्भ लिखते समय, कवि के नाम, कविता के शीर्षक के साथ-साथ यदि संभव हो तो उस काव्य-संग्रह या महाकाव्य का नाम भी लिखें जहाँ से कविता ली गई है। इससे उत्तर अधिक प्रभावशाली होता है।

(ii). उपर्युक्त पद्यांश में किसके सौन्दर्य का वर्णन किया गया है ?

## Solution:

### Step 1: Understanding the Question:

इस प्रश्न में यह पूछा गया है कि दी गई काव्य पंक्तियों में किस पात्र की सुंदरता का चित्रण किया गया है।

### Step 2: Detailed Explanation:

इन पंक्तियों में कवि जयशंकर प्रसाद ने 'कामायनी' की नायिका 'श्रद्धा' के अलौकिक सौन्दर्य का वर्णन किया है।

जब मनु प्रलय के बाद एकांत में निराश बैठे होते हैं, तब श्रद्धा का आगमन होता है। मनु उसके रूप-सौन्दर्य को देखकर चकित हो जाते हैं।

पद्यांश में नीले वस्त्रों के बीच श्रद्धा के कोमल और कांतिमान अंगों की शोभा का वर्णन है।

### Step 3: Final Answer:

उपर्युक्त पद्यांश में 'श्रद्धा' के रूप-सौन्दर्य का वर्णन किया गया है।

### Quick Tip

किसी भी पद्यांश को पढ़ते समय उसके केंद्रीय भाव और पात्रों को समझने का प्रयास करें। इससे आप "किसके बारे में?", "क्या कहा गया है?" जैसे प्रश्नों का उत्तर आसानी से दे पाएंगे।

(iii). बिजली के फूल से क्या तात्पर्य है ?

**Solution:**

**Step 1: Understanding the Question:**

प्रश्न में 'बिजली के फूल' इस काव्यात्मक उक्ति का अर्थ स्पष्ट करने के लिए कहा गया है।

**Step 2: Detailed Explanation:**

'बिजली के फूल' से तात्पर्य श्रद्धा के सुंदर, कोमल और कांतिमान (चमकदार) अंगों से है। कवि ने कल्पना की है कि श्रद्धा के नीले वस्त्र रूपी बादलों के वन के बीच, उसके गुलाबी रंग के कोमल अंग ऐसे प्रतीत हो रहे हैं जैसे बादलों के बीच बिजली का कोई फूल खिल गया हो। यहाँ बिजली की चमक (कांति) और फूल की कोमलता एवं रंग (गुलाबी) को मिलाकर श्रद्धा के सौंदर्य को व्यक्त किया गया है।

**Step 3: Final Answer:**

'बिजली के फूल' से तात्पर्य श्रद्धा के कांतिमान और लालिमायुक्त सुंदर शरीर से है।

### Quick Tip

काव्य में प्रयुक्त उपमाओं और रूपकों का अर्थ समझने के लिए उनकी तुलना किससे की गई है, इस पर ध्यान दें। यहाँ 'बिजली के फूल' की तुलना श्रद्धा के 'गुलाबी अंग' से की गई है।

(iv). 'परिधान' और 'मृदुल' शब्द किसके पर्यायवाची शब्द हैं ?

**Solution:**

**Step 1: Understanding the Question:**

इस प्रश्न में 'परिधान' और 'मृदुल' शब्दों के पर्यायवाची शब्द पूछे गए हैं।

**Step 2: Meaning and Synonyms:**

(i) परिधान : इस शब्द का अर्थ 'पहनावा' या 'वस्त्र' होता है।

पर्यायवाची : वस्त्र, कपड़ा, वसन, अम्बर, चीर।

(ii) मृदुल : इस शब्द का अर्थ 'नरम' या 'कोमल' होता है।

पर्यायवाची : कोमल, मुलायम, सुकुमार, मसृण ।

**Step 3: Final Answer:**

'परिधान' शब्द वस्त्र का पर्यायवाची है और 'मृदुल' शब्द कोमल का पर्यायवाची है ।

**Quick Tip**

अपनी शब्द-संपदा को बढ़ाने के लिए पर्यायवाची, विलोम, और अनेकार्थी शब्दों का नियमित अभ्यास करें। यह काव्य और गद्य दोनों की समझ को बेहतर बनाता है।

(v). रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(रेखांकित अंश : खिला हो ज्यों बिजली का फूल / मेघ-वन बीच गुलाबी रंग।)

**Solution:**

**Step 1: Understanding the Question:**

इस प्रश्न में पद्यांश की रेखांकित पंक्तियों का भावार्थ एवं काव्य-सौंदर्य स्पष्ट करने के लिए कहा गया है।

**Step 2: Detailed Explanation:**

**व्याख्या :** इन पंक्तियों में कवि जयशंकर प्रसाद श्रद्धा के अनुपम सौंदर्य का चित्रण करते हुए कहते हैं कि नीले वस्त्रों के मध्य से दिखाई देते श्रद्धा के गुलाबी रंग के सुकोमल अंग ऐसे प्रतीत हो रहे हैं, मानो नीले बादलों के सघन वन में बिजली का कोई गुलाबी फूल खिल उठा हो।

यहाँ श्रद्धा के नीले वस्त्रों की तुलना 'मेघ-वन' (बादलों का जंगल) से और उसके गुलाबी कांतिवान शरीर की तुलना 'बिजली के फूल' से की गई है। यह एक अत्यंत मनोहारी और नवीन कल्पना है।

**काव्य-सौंदर्य:** इन पंक्तियों में 'ज्यों' वाचक शब्द का प्रयोग होने के कारण उत्प्रेक्षा अलंकार है। कवि ने श्रद्धा के सौंदर्य की एक अप्रस्तुत संभावना व्यक्त की है। भाषा शुद्ध, साहित्यिक खड़ी बोली है और शैली चित्रात्मक है।

**Step 3: Final Answer:**

रेखांकित अंश में कवि कहते हैं कि नीले वस्त्रों में श्रद्धा का गुलाबी रंग का शरीर ऐसा लग रहा है मानो नीले बादलों के बीच बिजली का कोई सुंदर फूल खिल गया हो। इसमें उत्प्रेक्षा अलंकार है।

**Quick Tip**

रेखांकित अंश की व्याख्या करते समय, केवल उसका सरल अर्थ न लिखें, बल्कि उसमें निहित अलंकार (जैसे- उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा), रस, और भाषा-शैली जैसे काव्य-सौंदर्य के तत्वों का भी उल्लेख करें।

## Question (अथवा)

मैं कब कहता हूँ मेरे जग में दुर्धर गति के अनुकूल बने,  
मैं कब कहता हूँ जीवन-मरण नंदन-कानन का फूल बने ?  
काँटा कठोर है तीखा है, उसमें उसकी मर्यादा है,  
मैं कब कहता हूँ वह थककर शांत का ओटा फूल बने ?

(i). उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

### Solution:

#### Step 1: Understanding the Question:

इस प्रश्न में दिए गए पद्यांश का सन्दर्भ लिखने के लिए कहा गया है, जिसमें कविता का शीर्षक और उसके रचयिता का नाम बताना आवश्यक है।

#### Step 2: Detailed Explanation:

प्रस्तुत पद्यांश प्रयोगवादी काव्यधारा के प्रवर्तक एवं 'तार सप्तक' के संपादक, कवि सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' द्वारा रचित 'मैंने आहुति बनकर देखा' नामक कविता से उद्धृत है।

यह कविता उनके काव्य-संग्रह 'पूर्वा' में संकलित है।

अतः, इसका सन्दर्भ इस प्रकार लिखा जाएगा :

सन्दर्भ: प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक में संकलित 'अज्ञेय' जी द्वारा रचित कविता 'मैंने आहुति बनकर देखा' से लिया गया है।

#### Step 3: Final Answer:

यह पद्यांश सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' द्वारा रचित 'मैंने आहुति बनकर देखा' शीर्षक कविता से लिया गया है।

### Quick Tip

परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करने के लिए अपनी पाठ्य-पुस्तक में संकलित सभी कविताओं के शीर्षक और उनके कवियों के नाम कंठस्थ कर लें। यदि संभव हो तो कवि का युग (जैसे- छायावादी, प्रयोगवादी) भी याद रखें।

(ii). 'दुर्धर' और 'प्रांतर' शब्दों के अर्थ लिखिए।

### Solution:

#### Step 1: Understanding the Question:

इस प्रश्न में 'दुर्धर' और 'प्रांतर' इन दो शब्दों का अर्थ स्पष्ट करने के लिए कहा गया है।

**Step 2: Meaning of the Words:**

- (i) **दुर्धर** : इस शब्द का अर्थ है - जिसे रोकना या सहना बहुत कठिन हो, प्रचण्ड, तीव्र, या अदम्य। यहाँ "दुर्धर गति" का तात्पर्य जीवन की उस तेज और कठिन गति से है जिसे रोका नहीं जा सकता।
- (ii) **प्रांतर** : इस शब्द का अर्थ है - निर्जन स्थान, वीरान मैदान या जंगल, या विस्तृत सूना क्षेत्र।

**Step 3: Final Answer:**

दिए गए शब्दों के अर्थ निम्नलिखित हैं:

**दुर्धर** = जिसे रोकना कठिन हो / तीव्र / प्रचण्ड

**प्रांतर** = निर्जन स्थान / सूना मैदान

**Quick Tip**

कविता में शब्दों का अर्थ उनके प्रसंग के अनुसार समझना चाहिए। शब्दकोश का अर्थ जानने के साथ-साथ यह भी देखें कि कवि ने उस शब्द का प्रयोग किस भाव को व्यक्त करने के लिए किया है।

(iii). 'जीवन-मरु नन्दन-कानन का फूल' में कौन सा अलंकार है ?

**Solution:****Step 1: Understanding the Question:**

प्रश्न में दी गई काव्य-पंक्ति में प्रयुक्त अलंकार की पहचान करने के लिए कहा गया है।

**Step 2: Analysis of the line:**

पंक्ति में 'जीवन-मरु' शब्द आया है, जिसका अर्थ है 'जीवन रूपी मरुस्थल'।

यहाँ 'जीवन' (उपमेय) पर 'मरु' अर्थात् मरुस्थल (उपमान) का अभेद आरोप किया गया है।

जब उपमेय में उपमान का अभेद आरोप किया जाता है, वहाँ रूपक अलंकार होता है।

इसी प्रकार 'नन्दन-कानन का फूल' में भी जीवन की सुखद अवस्था को दर्शाया गया है, लेकिन अलंकार का मुख्य स्रोत 'जीवन-मरु' में है।

**Step 3: Final Answer:**

'जीवन-मरु' में जीवन को मरुस्थल का रूप दिए जाने के कारण यहाँ रूपक अलंकार है।

**Quick Tip**

रूपक अलंकार को पहचानने की सरल विधि है कि इसमें उपमेय और उपमान एक साथ आते हैं और उनके बीच योजक चिह्न (-) लगा हो सकता है, जैसे- 'चरण-कमल', 'जीवन-मरु'। इसमें 'जैसा', 'सा', 'सम' आदि वाचक शब्दों का प्रयोग नहीं होता।

(iv). उपर्युक्त पद्यांश का भाव स्पष्ट कीजिए।

**Solution:**

**Step 1: Understanding the Question:**

इस प्रश्न में पूरे पद्यांश का केंद्रीय भाव या आशय स्पष्ट करने के लिए कहा गया है।

**Step 2: Detailed Explanation:**

इन पंक्तियों में कवि 'अज्ञेय' जीवन के प्रति एक यथार्थवादी और संघर्षपूर्ण दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं। कवि कहते हैं कि मेरी यह इच्छा बिल्कुल नहीं है कि यह संसार मेरी कठिन और तीव्र गति के अनुसार चले या मेरे अनुकूल बन जाए। मैं यह भी नहीं चाहता कि मेरा संघर्षपूर्ण और मरुस्थल जैसा नीरस जीवन, इन्द्र के नंदन वन के फूल के समान सुखद और सुंदर बन जाए। कवि का मानना है कि जीवन की कठिनाइयों और संघर्षों का अपना ही महत्व और गौरव है। जिस प्रकार काँटे का अस्तित्व और उसकी मर्यादा उसके कठोर और तीखेपन में है, उसी प्रकार जीवन की सार्थकता संघर्षों में है। कवि नहीं चाहते कि यह संघर्ष रूपी काँटा अपना स्वाभाविक गुण खोकर किसी निर्जन स्थान में खिलने वाला एक साधारण और महत्वहीन फूल बन जाए।

**भाव :** कवि जीवन की चुनौतियों को स्वीकार करते हैं और संघर्ष में ही जीवन का सौंदर्य एवं गौरव देखते हैं।

**Step 3: Final Answer:**

पद्यांश का भाव यह है कि कवि जीवन की कठिन वास्तविकताओं से भागना नहीं चाहते, बल्कि वे संघर्ष को ही जीवन की मर्यादा और पहचान मानते हैं और किसी भी कीमत पर कमजोर या साधारण बनना स्वीकार नहीं करते।

#### Quick Tip

किसी भी पद्यांश का भावार्थ लिखते समय, पहले उसकी प्रत्येक पंक्ति का सरल अर्थ समझें और फिर उन सभी अर्थों को मिलाकर एक केंद्रीय विचार के रूप में प्रस्तुत करें। कवि के दृष्टिकोण को समझना महत्वपूर्ण है।

(v). रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(रेखांकित अंश : काँटा कठोर है तीखा है, उसमें उसकी मर्यादा है, / मैं कब कहता हूँ वह घटकर प्रांतर का ओछा फूल बने ?)

**Solution:**

**Step 1: Understanding the Question:**

इस प्रश्न में पद्यांश की रेखांकित पंक्तियों का अर्थ और भाव स्पष्ट करने के लिए कहा गया है।

**Step 2: Detailed Explanation:**

**व्याख्या :** कवि 'अज्ञेय' इन पंक्तियों में जीवन के संघर्ष और व्यक्ति के स्वाभिमान को काँटे के प्रतीक

के माध्यम से व्यक्त करते हैं।

**पहली पंक्ति :** "काँटा कठोर है तीखा है, उसमें उसकी मर्यादा है," - कवि कहते हैं कि काँटे की पहचान और उसका सम्मान (मर्यादा) उसके गुणों- कठोरता और तीखेपन- में ही निहित है। यदि काँटा कोमल हो जाए तो उसका अस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा। इसी प्रकार, संघर्षशील और स्वाभिमानी व्यक्ति का गौरव कठिनाइयों का सामना करने में है, उनसे हार मानने में नहीं।

**दूसरी पंक्ति :** "मैं कब कहता हूँ वह घटकर प्रांतर का ओछा फूल बने ?" - कवि आगे कहते हैं कि मैं यह बिल्कुल नहीं चाहता कि यह संघर्ष रूपी काँटा अपना स्वाभाविक गुण (कठोरता) त्याग कर ('घटकर') किसी निर्जन स्थान पर खिलने वाला एक तुच्छ ('ओछा') या महत्वहीन फूल बन जाए। कवि के लिए संघर्ष और स्वाभिमान के साथ जीना, सरल किन्तु महत्वहीन जीवन जीने से कहीं बेहतर है।

### Step 3: Final Answer:

रेखांकित अंश में कवि यह कहना चाहते हैं कि जीवन की कठिनाइयों और संघर्षों का अपना ही गौरव है। वे अपने संघर्षपूर्ण व्यक्तित्व को किसी भी कीमत पर एक साधारण और महत्वहीन अस्तित्व में बदलना नहीं चाहते, क्योंकि संघर्ष में ही व्यक्ति की वास्तविक पहचान और सम्मान है।

### Quick Tip

व्याख्या करते समय प्रतीक और बिम्ब पर विशेष ध्यान दें। यहाँ 'काँटा' संघर्ष का प्रतीक है और 'ओछा फूल' सरल किन्तु महत्वहीन जीवन का प्रतीक है। इन प्रतीकों को स्पष्ट करने से आपकी व्याख्या अधिक गहन और सटीक होगी।

5. (क) (i). निम्नलिखित में से किसी एक लेखक का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी प्रमुख रचनाओं का उल्लेख कीजिए : (अधिकतम शब्द-सीमा : 80 शब्द)  
हजारीप्रसाद द्विवेदी

### Solution:

#### Step 1: Understanding the Question:

इस प्रश्न में आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी का साहित्यिक परिचय और उनकी प्रमुख रचनाओं का उल्लेख लगभग 80 शब्दों में करना है।

#### Step 2: Detailed Explanation:

**साहित्यिक परिचय :** आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी आधुनिक हिन्दी गद्य के एक मूर्धन्य आलोचक, निबंधकार, उपन्यासकार तथा साहित्येतिहासकार थे। उन्होंने साहित्य की अनेक विधाओं में उत्कृष्ट रचनाएँ कीं। द्विवेदी जी की साहित्यिक दृष्टि अत्यंत व्यापक एवं उदार थी। उन्होंने भारतीय संस्कृति, इतिहास और दर्शन का गहरा अध्ययन किया, जिसका प्रभाव उनके साहित्य में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। उनकी भाषा परिमार्जित, तत्सम प्रधान और प्रवाहपूर्ण है।

**प्रमुख रचनाएँ :**

**निबंध संग्रह :** अशोक के फूल, कुटज, विचार और वितर्क।

**उपन्यास :** बाणभट्ट की आत्मकथा, चारु चंद्रलेख, पुनर्नवा।

आलोचना/इतिहास : हिन्दी साहित्य की भूमिका, कबीर।

**Step 3: Final Answer (Formatted as per word limit):**

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी हिन्दी साहित्य के प्रख्यात निबंधकार, आलोचक एवं उपन्यासकार थे। उन्होंने भारतीय संस्कृति और इतिहास की गहरी समझ को अपने साहित्य का आधार बनाया। उनकी भाषा संस्कृतनिष्ठ, सरस और प्रवाहपूर्ण है। उन्होंने मानवतावादी दृष्टिकोण से साहित्य का मूल्यांकन किया। उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं - निबंध : 'अशोक के फूल', 'कुटज'; उपन्यास : 'बाणभट्ट की आत्म-कथा', 'पुनर्नवा'; आलोचना : 'हिन्दी साहित्य की भूमिका' तथा 'कबीर'।

**Quick Tip**

साहित्यिक परिचय लिखते समय, लेखक की साहित्यिक विधा (निबंधकार, उपन्यासकार आदि), उनकी भाषा-शैली की विशेषताएँ और साहित्य में उनके योगदान का संक्षिप्त उल्लेख करें। रचनाओं को विधा के अनुसार वर्गीकृत करके लिखना अधिक प्रभावशाली होता है।

5. (क) (ii). निम्नलिखित में से किसी एक लेखक का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी प्रमुख रचनाओं का उल्लेख कीजिए : (अधिकतम शब्द-सीमा : 80 शब्द)  
कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'

**Solution:**

**Step 1: Understanding the Question:**

इस प्रश्न में कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' का साहित्यिक परिचय और उनकी प्रमुख रचनाओं का उल्लेख लगभग 80 शब्दों में करना है।

**Step 2: Detailed Explanation:**

**साहित्यिक परिचय :** कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' हिन्दी के जाने-माने निबंधकार, पत्रकार, और स्वतंत्रता सेनानी थे। उन्होंने अपने लेखन के माध्यम से राष्ट्रीयता, समाज-सुधार और मानवीय मूल्यों का प्रचार किया। उनके निबंधों में आत्मीयता, सरसता और चिंतन की गहराई मिलती है। उन्होंने पत्रकारिता के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया और कई पत्र-पत्रिकाओं का संपादन किया। उनकी भाषा सहज, सरल और मुहावरेदार है, जो सीधे पाठक के हृदय को छूती है।

**प्रमुख रचनाएँ :**

रेखाचित्र : नयी पीढ़ी के विचार, जिंदगी मुस्कुराई।

लघु कथा : आकाश के तारे, धरती के फूल।

संस्मरण : दीप जले शंख बजे।

ललित निबंध : बाजे पायलिया के घुँघरू, महके आँगन चहके द्वार।

**Step 3: Final Answer (Formatted as per word limit):**

कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' एक प्रतिष्ठित पत्रकार, निबंधकार और स्वतंत्रता सेनानी थे। उन्होंने अपनी रचनाओं में मानवीय मूल्यों, राष्ट्रीय चेतना और सामाजिक सरोकारों को प्रमुखता दी। उनकी भाषा अत्यंत सरल, सजीव और प्रवाहपूर्ण है। एक सफल रिपोर्ताज लेखक के रूप में भी वे प्रसिद्ध हैं।

उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं- 'जिंदगी मुस्कुराई', 'माटी हो गई सोना', 'बाजे पायलिया के घुँघरू', 'दीप जले शंख बजे' तथा 'महके आँगन चहके द्वार'।

### Quick Tip

किसी लेखक का परिचय देते समय यदि उनकी कोई विशेष पहचान हो (जैसे- पत्रकार, स्वतंत्रता सेनानी), तो उसका उल्लेख अवश्य करें। यह आपके उत्तर को विशिष्ट बनाता है।

5. (क) (iii). निम्नलिखित में से किसी एक लेखक का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी प्रमुख रचनाओं का उल्लेख कीजिए : (अधिकतम शब्द-सीमा : 80 शब्द)  
हरिशंकर परसाई

### Solution:

#### Step 1: Understanding the Question:

इस प्रश्न में हरिशंकर परसाई का साहित्यिक परिचय और उनकी प्रमुख रचनाओं का उल्लेख लगभग 80 शब्दों में करना है।

#### Step 2: Detailed Explanation:

**साहित्यिक परिचय :** हरिशंकर परसाई हिन्दी साहित्य में व्यंग्य विधा के प्रवर्तक लेखक माने जाते हैं। उन्होंने सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक पाखंडों पर अपनी व्यंग्यात्मक रचनाओं के माध्यम से तीखा प्रहार किया। उनका व्यंग्य केवल मनोरंजन नहीं करता, बल्कि पाठक को गहराई से सोचने पर विवश करता है। उन्होंने कहानी, निबंध, और उपन्यास जैसी विधाओं में भी व्यंग्य को सफलतापूर्वक स्थापित किया। उनकी भाषा सरल, चुटीली और मारक होती है।

#### प्रमुख रचनाएँ :

**कहानी-संग्रह :** हँसते हैं रोते हैं, जैसे उनके दिन फिरे।

**उपन्यास :** रानी नागफनी की कहानी, तट की खोज।

**व्यंग्य-संग्रह :** तब की बात और थी, भूत के पाँव पीछे, सदाचार का तावीज, शिकायत मुझे भी है, विकलांग श्रद्धा का दौर।

#### Step 3: Final Answer (Formatted as per word limit):

हरिशंकर परसाई हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ व्यंग्यकारों में से एक हैं। उन्होंने व्यंग्य को एक स्वतंत्र विधा के रूप में स्थापित किया। अपनी रचनाओं के माध्यम से उन्होंने समाज और राजनीति में व्याप्त भ्रष्टाचार, पाखंड और विसंगतियों पर सीधा और तीखा प्रहार किया। उनकी भाषा सरल किन्तु व्यंग्यात्मक चोट करने में अत्यंत प्रभावी है। उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं- 'रानी नागफनी की कहानी', 'तट की खोज', 'भूत के पाँव पीछे', 'सदाचार का तावीज' तथा 'विकलांग श्रद्धा का दौर'।

### Quick Tip

जब किसी लेखक की पहचान किसी विशेष विधा (जैसे- व्यंग्य) से हो, तो साहित्यिक परिचय की शुरुआत उसी से करें। यह परीक्षक पर अच्छा प्रभाव डालता है और दिखाता है कि आप लेखक के मुख्य योगदान को समझते हैं।

5. (क) (iv). निम्नलिखित में से किसी एक लेखक का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी प्रमुख रचनाओं का उल्लेख कीजिए : (अधिकतम शब्द-सीमा : 80 शब्द)

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

### Solution:

#### Step 1: Understanding the Question:

इस प्रश्न में डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का साहित्यिक परिचय और उनकी प्रमुख रचनाओं का उल्लेख लगभग 80 शब्दों में करना है।

#### Step 2: Detailed Explanation:

**साहित्यिक परिचय :** भारत के पूर्व राष्ट्रपति और महान वैज्ञानिक डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम एक उत्कृष्ट लेखक भी थे। उन्होंने मुख्य रूप से अपनी आत्मकथात्मक और प्रेरक पुस्तकों के माध्यम से साहित्य में योगदान दिया। उनकी रचनाओं का मुख्य उद्देश्य भारत के युवाओं को प्रेरित करना, उन्हें बड़े सपने देखने और उन्हें साकार करने के लिए प्रोत्साहित करना था। उनकी भाषा अत्यंत सरल, सीधी और प्रेरक है, जो सीधे युवाओं के दिल में उतर जाती है।

#### प्रमुख रचनाएँ :

उनकी अधिकांश रचनाएँ अंग्रेजी में हैं, जिनके हिंदी अनुवाद भी बहुत लोकप्रिय हुए।

**आत्मकथा :** Wings of Fire (अग्नि की उड़ान)।

**अन्य प्रेरक पुस्तकें:** Ignited Minds (तेजस्वी मन), India 2020: A Vision for the New Millennium (भारत 2020: नवयुग का स्वप्न), Turning Points (मेरे सपनों का भारत)।

#### Step 3: Final Answer (Formatted as per word limit):

'मिसाइल मैन' के नाम से प्रसिद्ध, भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम एक महान वैज्ञानिक होने के साथ-साथ एक प्रेरक लेखक भी थे। उन्होंने अपने लेखन को देश के युवाओं को मार्गदर्शन देने और उन्हें प्रेरित करने का माध्यम बनाया। उनकी भाषा सरल, व्यावहारिक और ओजपूर्ण है। उनकी आत्मकथा 'अग्नि की उड़ान' (Wings of Fire) ने करोड़ों युवाओं को प्रेरित किया है। उनकी अन्य प्रमुख रचनाएँ हैं- 'इण्डिया 2020', 'तेजस्वी मन' (Ignited Minds), तथा 'मेरे सपनों का भारत'।

### Quick Tip

डॉ. कलाम जैसे व्यक्तित्व का साहित्यिक परिचय देते समय, उनके मूल पेशे (वैज्ञानिक, राष्ट्र-पति) का उल्लेख करते हुए उनके साहित्यिक योगदान (प्रेरक लेखन) को रेखांकित करें। यह उनके बहुआयामी व्यक्तित्व को दर्शाता है।

5. (ख) (i). निम्नलिखित में से किसी एक कवि का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी प्रमुख रचनाओं का उल्लेख कीजिए :  
जयशंकर प्रसाद

**Solution:**

**Step 1: Understanding the Question:**

इस प्रश्न में छायावादी कवि जयशंकर प्रसाद का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी प्रमुख रचनाओं का उल्लेख करने के लिए कहा गया है। उत्तर की शब्द-सीमा लगभग 80 शब्द है।

**Step 2: Detailed Explanation:**

**साहित्यिक परिचय :** जयशंकर प्रसाद हिन्दी साहित्य के छायावादी युग के प्रवर्तक, उन्नायक एवं प्रतिनिधि कवि हैं। वे एक बहुमुखी प्रतिभा संपन्न साहित्यकार थे, जिन्होंने कविता के अतिरिक्त नाटक, उपन्यास, कहानी और निबंध जैसी विधाओं में भी लेखन किया। उनके काव्य में प्रेम, सौन्दर्य, प्रकृति, करुणा और दार्शनिकता के भावों की प्रमुखता है। उनकी भाषा शुद्ध, साहित्यिक, संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली है।

**प्रमुख रचनाएँ :**

**महाकाव्य :** कामायनी।

**काव्य-संग्रह :** आँसू, लहर, झरना।

**नाटक :** चन्द्रगुप्त, स्कन्दगुप्त, ध्रुवस्वामिनी।

**उपन्यास :** कंकाल, तितली, इरावती (अपूर्ण)।

**Step 3: Final Answer (Formatted as per word limit):**

छायावाद के प्रवर्तक एवं आधार-स्तम्भ जयशंकर प्रसाद एक बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उन्होंने कविता, नाटक, उपन्यास और कहानी सभी विधाओं में उत्कृष्ट रचनाएँ कीं। उनके काव्य में प्रेम, सौन्दर्य, प्रकृति-चित्रण और दार्शनिकता का अद्भुत समन्वय मिलता है। उनकी भाषा संस्कृतनिष्ठ, साहित्यिक एवं चित्रात्मक है। **प्रमुख रचनाएँ** - महाकाव्य : 'कामायनी'; काव्य : 'आँसू', 'लहर'; नाटक : 'चन्द्रगुप्त', 'स्कन्दगुप्त'; उपन्यास : 'कंकाल', 'तितली'।

#### Quick Tip

साहित्यिक परिचय में कवि के युग (जैसे- छायावाद), उसकी काव्य की मुख्य विशेषताओं (जैसे- प्रेम, सौन्दर्य) और भाषा-शैली का उल्लेख अवश्य करें। यह आपके उत्तर को पूर्णता प्रदान करता है।

5. (ख) (ii). निम्नलिखित में से किसी एक कवि का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी प्रमुख रचनाओं का उल्लेख कीजिए :  
सुमित्रानन्दन पन्त

## Solution:

### Step 1: Understanding the Question:

इस प्रश्न में कवि सुमित्रानन्दन पन्त का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी प्रमुख रचनाओं का उल्लेख करने के लिए कहा गया है। उत्तर की शब्द-सीमा लगभग 80 शब्द है।

### Step 2: Detailed Explanation:

**साहित्यिक परिचय :** सुमित्रानन्दन पन्त को 'प्रकृति का सुकुमार कवि' कहा जाता है। वे छायावाद के चार प्रमुख स्तम्भों में से एक हैं। उनका काव्य-संसार अत्यंत विस्तृत है, जो छायावाद से प्रगतिवाद और फिर अरविन्द-दर्शन से प्रभावित अध्यात्मवाद तक फैला हुआ है। उनके काव्य में प्रकृति के मनोरम रूपों, मानवीय सौन्दर्य और उच्च दार्शनिक विचारों का सुंदर चित्रण हुआ है। उनकी भाषा कोमल, मधुर, संगीतात्मक और चित्रमयी है।

**प्रमुख रचनाएँ :**

**छायावादी :** वीणा, पल्लव, गुंजन।

**प्रगतिवादी :** युगान्त, युगवाणी, ग्राम्या।

**आध्यात्मिक :** स्वर्ण किरण, लोकायतन, चिदम्बरा (जिस पर उन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला)।

### Step 3: Final Answer (Formatted as per word limit):

'प्रकृति के सुकुमार कवि' के रूप में विख्यात सुमित्रानन्दन पन्त छायावाद के प्रमुख आधार-स्तम्भ हैं। उनका काव्य-विकास छायावाद, प्रगतिवाद और अध्यात्मवाद के तीन चरणों में हुआ। उनके काव्य में प्रकृति के कोमल और मनोरम रूपों का सजीव चित्रण मिलता है। उनकी भाषा अत्यंत कोमल, संगीतात्मक और चित्रमयी है। प्रमुख रचनाएँ - 'वीणा', 'पल्लव', 'गुंजन', 'ग्राम्या', 'युगान्त' तथा 'चिदम्बरा' (ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त)।

## Quick Tip

यदि किसी कवि को कोई विशेष उपाधि मिली हो (जैसे- 'प्रकृति का सुकुमार कवि'), तो उसका उल्लेख परिचय में अवश्य करें। साथ ही, किसी कृति पर मिले प्रमुख पुरस्कार (जैसे- ज्ञानपीठ) का जिक्र करना भी महत्वपूर्ण है।

5. (ख) (iii). निम्नलिखित में से किसी एक कवि का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी प्रमुख रचनाओं का उल्लेख कीजिए :  
महादेवी वर्मा

## Solution:

### Step 1: Understanding the Question:

इस प्रश्न में कवयित्री महादेवी वर्मा का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी प्रमुख रचनाओं का उल्लेख करने के लिए कहा गया है। उत्तर की शब्द-सीमा लगभग 80 शब्द है।

**Step 2: Detailed Explanation:**

**साहित्यिक परिचय :** महादेवी वर्मा को 'आधुनिक युग की मीरा' कहा जाता है। वे छायावाद की एक प्रमुख स्तम्भ हैं। उनके काव्य में विरह की वेदना, अज्ञात प्रियतम के प्रति प्रेम और रहस्यवादी भावना की प्रधानता है। उनके गीतों में संगीतात्मकता और भावप्रवणता का अनूठा संगम है। वे एक कुशल गद्य-लेखिका भी थीं, और उनके रेखाचित्र तथा संस्मरण हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि हैं। उनकी भाषा तत्सम-प्रधान, मधुर और चित्रात्मक है।

**प्रमुख रचनाएँ :**

**काव्य-संग्रह :** नीहार, रश्मि, नीरजा, सान्ध्यगीत, दीपशिखा, यामा (जिस पर उन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला)।

**गद्य (रेखाचित्र/संस्मरण):** अतीत के चलचित्र, स्मृति की रेखाएँ, पथ के साथी।

**Step 3: Final Answer (Formatted as per word limit):**

'आधुनिक युग की मीरा' कही जाने वाली महादेवी वर्मा छायावाद की प्रमुख कवयित्री हैं। उनके काव्य में वेदना, विरह-अनुभूति और रहस्यवादी स्वर प्रमुख है। वे एक श्रेष्ठ गद्य-लेखिका भी थीं, जिनके रेखाचित्र और संस्मरण अद्वितीय हैं। उनकी भाषा तत्सम प्रधान, कोमल और संगीतात्मक है। **प्रमुख रचनाएँ - काव्य :** 'नीहार', 'नीरजा', 'दीपशिखा' और 'यामा' (ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त); **गद्य:** 'अतीत के चलचित्र', 'स्मृति की रेखाएँ'।

**Quick Tip**

जब कोई साहित्यकार पद्य और गद्य दोनों में समान रूप से कुशल हो, तो परिचय में दोनों का उल्लेख करें। इससे उनके साहित्यिक व्यक्तित्व की समग्रता का पता चलता है।

5. (ख) (iv). निम्नलिखित में से किसी एक कवि का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी प्रमुख रचनाओं का उल्लेख कीजिए :

‘अज्ञेय’

**Solution:**

**Step 1: Understanding the Question:**

इस प्रश्न में कवि 'अज्ञेय' का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी प्रमुख रचनाओं का उल्लेख करने के लिए कहा गया है। उत्तर की शब्द-सीमा लगभग 80 शब्द है।

**Step 2: Detailed Explanation:**

**साहित्यिक परिचय :** सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' हिन्दी साहित्य में प्रयोगवाद के प्रवर्तक और 'तार सप्तक' के संपादक के रूप में विख्यात हैं। उन्होंने कविता के भाव और शिल्प दोनों में नए-नए प्रयोग किए। उनके साहित्य में वैयक्तिक चेतना, बौद्धिकता और नवीन बिम्बों-प्रतीकों का प्रयोग प्रमुखता से मिलता है। वे कवि होने के साथ-साथ एक उत्कृष्ट उपन्यासकार, कहानीकार, निबंधकार और पत्रकार भी थे।

**प्रमुख रचनाएँ :**

**काव्य-संग्रह :** हरी घास पर क्षण भर, इन्द्रधनु रौंदे हुए ये, आँगन के पार द्वार, कितनी नावों में कितनी

बार (जिस पर उन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला)।  
उपन्यास : शेखर : एक जीवनी, नदी के द्वीप।

**Step 3: Final Answer (Formatted as per word limit):**

सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' हिन्दी में 'प्रयोगवाद' के प्रवर्तक और 'तार सप्तक' के संपादक थे। उन्होंने कविता में नए बिम्बों, प्रतीकों और भाषा-शिल्प का प्रयोग किया। उनके साहित्य में वैयक्तिक चेतना और बौद्धिकता का प्रभाव है। वे कवि के साथ-साथ सफल उपन्यासकार और निबंधकार भी थे। प्रमुख रचनाएँ - काव्य : 'हरी घास पर क्षण भर', 'कितनी नावों में कितनी बार' (ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त); उपन्यास : 'शेखर : एक जीवनी', 'नदी के द्वीप'।

**Quick Tip**

'अज्ञेय' जैसे किसी साहित्यिक आंदोलन के प्रवर्तक का परिचय देते समय, उस आंदोलन (जैसे- प्रयोगवाद) और उससे संबंधित महत्वपूर्ण कार्य (जैसे- तार सप्तक का संपादन) का उल्लेख करना अनिवार्य है।

**6. 'लाटी' कहानी का कथासार अपने शब्दों में लिखिए।**

**Solution:**

**Step 1: Understanding the Question:**

इस प्रश्न में शिवानी द्वारा रचित 'लाटी' कहानी का सार अपने शब्दों में लिखने के लिए कहा गया है। कथासार में कहानी के मुख्य पात्रों, प्रमुख घटनाओं और मूल भाव को संक्षेप में प्रस्तुत करना होता है।

**Step 2: Key Elements of the Story:**

लेखिका : शिवानी

मुख्य पात्र : बानो (नायिका), कप्तान जोशी (बानो के पति)

केंद्रीय भाव : प्रेम, प्रतीक्षा, विरह की मार्मिक पीड़ा और मानसिक आघात का चित्रण।

**Step 3: Detailed Summary:**

'लाटी' शिवानी द्वारा रचित एक मार्मिक कहानी है जो प्रेम और प्रतीक्षा के दर्द को दर्शाती है। कहानी की नायिका बानो अपने पति कप्तान जोशी से बहुत प्रेम करती है। कप्तान जोशी एक सैन्य अधिकारी हैं और उन्हें युद्ध पर जाना पड़ता है। एक दिन उनके विमान दुर्घटनाग्रस्त होने और उनके शहीद हो जाने का समाचार आता है।

यह समाचार सुनकर बानो को गहरा मानसिक आघात लगता है और वह अपना मानसिक संतुलन खो बैठती है। उसकी स्मृति उसी दिन पर अटक जाती है जब कप्तान जोशी ने वापस आने का वादा किया था। वह हर रोज तैयार होकर दरवाजे पर खड़ी हो जाती है और डाकिये (जिसे वह 'लाटी' कहती थी क्योंकि वह लाठी लेकर आता था) की प्रतीक्षा करती है, इस उम्मीद में कि उसके पति का पत्र आएगा।

कहानी में मोड़ तब आता है जब कप्तान जोशी, जो दुर्घटना में बच गए थे, कई वर्षों बाद घर लौटते

हैं। लेकिन बानो उन्हें पहचान नहीं पाती। वह उन्हें एक अजनबी समझती है और उसकी प्रतीक्षा जारी रहती है। कप्तान जोशी अपनी पत्नी की यह दशा देखकर टूट जाते हैं और उसकी स्मृति वापस लाने के हर संभव प्रयास करते हैं, पर सब व्यर्थ रहता है।

अंत में, कप्तान जोशी अपनी पहचान छिपाकर एक सेवक के रूप में बानो की देखभाल करने का निश्चय करते हैं। कहानी का अंत अत्यंत करुण है, जो यह दिखाता है कि प्रेम केवल पाने का नाम नहीं, बल्कि निस्वार्थ सेवा और त्याग का भी नाम है।

#### Step 4: Final Answer:

अतः, 'लाटी' कहानी एक ऐसी पत्नी की करुण गाथा है जो पति के विरह के आघात में अपनी याददाश्त खो देती है और जीवन भर उसकी प्रतीक्षा करती रह जाती है। यह कहानी प्रेम की निस्वार्थता और त्याग के मर्म को अत्यंत संवेदनशील ढंग से प्रस्तुत करती है।

#### Quick Tip

कहानी का सार लिखते समय, घटनाओं को क्रमबद्ध रूप में लिखें। कहानी के प्रमुख पात्रों और उनके चरित्र की मुख्य विशेषताओं का उल्लेख करें। अंत में कहानी के मूल संदेश या भाव को एक या दो वाक्यों में स्पष्ट करें।

अथवा 'ध्रुवयात्रा' कहानी के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए।

#### Solution:

##### Step 1: Understanding the Question:

इस प्रश्न में जैनेन्द्र कुमार द्वारा रचित 'ध्रुवयात्रा' कहानी का उद्देश्य स्पष्ट करने के लिए कहा गया है। उद्देश्य का अर्थ है कि लेखक इस कहानी के माध्यम से पाठकों तक क्या संदेश पहुँचाना चाहता है।

##### Step 2: Key Themes and Conflicts:

लेखक : जैनेन्द्र कुमार

मुख्य पात्र : राजा रिपुदमन बहादुर, उर्मिला, आचार्य मारुतिप्रसाद।

केंद्रीय द्वंद्व : प्रेम और कर्तव्य के बीच का संघर्ष, सामाजिक मर्यादाओं और व्यक्तिगत भावनाओं के बीच का टकराव।

##### Step 3: Explanation of the Objective:

जैनेन्द्र कुमार एक मनोवैज्ञानिक कथाकार हैं और 'ध्रुवयात्रा' कहानी के माध्यम से उन्होंने कई उद्देश्यों को स्पष्ट किया है, जो निम्नलिखित हैं:

1. प्रेम के स्वरूप की विवेचना : कहानी का मुख्य उद्देश्य प्रेम के आदर्श और यथार्थ स्वरूप को दिखाना है। राजा रिपुदमन और उर्मिला का प्रेम सच्चा और गहरा है, परन्तु सामाजिक मर्यादाओं के कारण वे एक नहीं हो पाते। लेखक यह दर्शाना चाहते हैं कि सच्चा प्रेम स्वार्थरहित और त्यागपूर्ण होता है।

2. **कर्तव्य और भावना का द्वंद्व:** कहानी यह दिखाती है कि मनुष्य अक्सर अपनी व्यक्तिगत भावनाओं (प्रेम) और सामाजिक कर्तव्यों के बीच फँस जाता है। राजा रिपुदमन अपने प्रेम (उर्मिला और अपने पुत्र) को अपनाना चाहते हैं, लेकिन समाज के भय से ऐसा नहीं कर पाते। इस मानसिक द्वंद्व से बचने के लिए वे ध्रुव यात्रा जैसे कठिन लक्ष्य को चुनते हैं।
3. **मनोवैज्ञानिक यथार्थ का चित्रण :** लेखक का उद्देश्य मानव मन की जटिलताओं को उजागर करना है। रिपुदमन का ध्रुव प्रदेश की यात्रा पर जाना वास्तव में जीवन की जटिलताओं से पलायन है। वह प्रेम की उष्णता के बजाय ध्रुव की परम शीतलता में सत्य खोजना चाहता है, जो उसके आंतरिक संघर्ष को दिखाता है।
4. **सामाजिक मान्यताओं पर प्रश्न :** कहानी परोक्ष रूप से उन सामाजिक रूढ़ियों और मान्यताओं पर प्रश्नचिह्न लगाती है जो दो प्रेम करने वालों को मिलने से रोकती हैं और उन्हें मानसिक पीड़ा देती हैं।

#### Step 4: Final Answer:

अतः, 'ध्रुवयात्रा' कहानी का उद्देश्य प्रेम, कर्तव्य, और सामाजिकता के अंतर्द्वंद्व में फँसे व्यक्ति की मानसिक स्थिति का चित्रण करना है। लेखक यह संदेश देना चाहते हैं कि जीवन की वास्तविकताओं से पलायन करने के बजाय उनका सामना करना चाहिए, अन्यथा व्यक्ति अपने लक्ष्य को प्राप्त करके भी जीवन में अकेला और पराजित महसूस करता है।

#### Quick Tip

किसी कहानी का उद्देश्य लिखते समय, केवल कथानक का वर्णन न करें। बल्कि यह बताएं कि लेखक उस कथानक के माध्यम से किन मानवीय मूल्यों, सामाजिक समस्याओं या मनोवैज्ञानिक सत्यों को उजागर करना चाहता है।

#### Question (7)

(क) (i). 'रश्मि रथी' खण्डकाव्य के आधार पर कर्ण का चरित्र-चित्रण कीजिए।

#### Solution:

##### Step 1: Understanding the Question:

इस प्रश्न में रामधारी सिंह 'दिनकर' द्वारा रचित खण्डकाव्य 'रश्मि रथी' के नायक कर्ण की चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख करने के लिए कहा गया है।

##### Step 2: Key Character Traits of Karna:

- महान् योद्धा और धनुर्धर
- सच्चा मित्र और वचन का पक्का
- महान दानवीर

- सामाजिक अपमान और अन्याय का शिकार एक नायक
- स्वाभिमानी और पुरुषार्थी

**Step 3: Final Answer (Formatted as per word limit):**

'रश्मिर्थी' के नायक कर्ण एक महान योद्धा, सच्चे मित्र और अद्वितीय दानवीर हैं। वे सामाजिक तिरस्कार सहकर भी अपने पौरुष के बल पर श्रेष्ठता अर्जित करते हैं। दुर्योधन के प्रति उनकी मित्रता अटूट है। वे अपने स्वाभिमान से कोई समझौता नहीं करते। श्रीकृष्ण के प्रलोभनों को ठुकराकर वे मित्र-धर्म निभाते हैं। अपना कवच-कुण्डल दान देकर वे 'दानवीर कर्ण' कहलाते हैं। उनका चरित्र त्याग, वीरता और मित्रता का प्रतीक है।

**Quick Tip**

चरित्र-चित्रण करते समय, पात्र के गुणों को शीर्षकों (जैसे- महान योद्धा, दानवीर) में विभाजित करके उनके बारे में एक-एक पंक्ति लिखना उत्तर को अधिक व्यवस्थित और प्रभावशाली बनाता है।

(क) (ii). 'रश्मिर्थी' खण्डकाव्य की कथावस्तु अपने शब्दों में लिखिए।

**Solution:**

**Step 1: Understanding the Question:**

इस प्रश्न में 'रश्मिर्थी' खण्डकाव्य की पूरी कहानी को संक्षेप में अपने शब्दों में लिखने के लिए कहा गया है।

**Step 2: Main Plot Points:**

- कर्ण का जन्म और सूत-पुत्र के रूप में पालन-पोषण।
- शस्त्र-कौशल प्रदर्शन और दुर्योधन से मित्रता।
- श्रीकृष्ण द्वारा कर्ण को उसके जन्म का रहस्य बताना और पांडव पक्ष में आने का आग्रह।
- कर्ण द्वारा श्रीकृष्ण का प्रस्ताव अस्वीकार करना।
- इन्द्र द्वारा कर्ण से कवच-कुण्डल दान में मांगना।
- महाभारत युद्ध में कर्ण का शौर्य और वीरगति।

**Step 3: Final Answer (Formatted as per word limit):**

'रश्मिर्थी' की कथा महाभारत के वीर योद्धा कर्ण के जीवन पर आधारित है। इसमें कर्ण के जन्म से लेकर वीरगति तक की प्रमुख घटनाओं का वर्णन है। सूत-पुत्र होने के कारण समाज द्वारा अपमानित कर्ण को दुर्योधन सम्मान देता है, जिससे कर्ण उसका अनन्य मित्र बन जाता है। श्रीकृष्ण के समझाने पर भी वह मित्र-धर्म निभाने के लिए पांडव पक्ष में जाने से इनकार कर देता है। अंत में, वह अपना कवच-कुण्डल

दान कर महाभारत के युद्ध में वीरतापूर्वक लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त होता है।

### Quick Tip

कथावस्तु लिखते समय कहानी की मुख्य घटनाओं को क्रम से प्रस्तुत करें। अनावश्यक विस्तार से बचें और शब्द-सीमा का ध्यान रखते हुए केवल सारगर्भित बातें ही लिखें।

(ख) (i). 'त्यागपथी' खण्डकाव्य के चतुर्थ सर्ग का कथानक लिखिए।

### Solution:

#### Step 1: Understanding the Question:

इस प्रश्न में 'त्यागपथी' खण्डकाव्य के केवल चौथे सर्ग की कहानी को संक्षेप में लिखने के लिए कहा गया है।

#### Step 2: Plot of the Fourth Canto:

- हर्षवर्धन का अपनी बहन राज्यश्री को खोजने के लिए वन में जाना।
- एक भिक्षु से राज्यश्री के आत्मदाह करने की सूचना मिलना।
- हर्षवर्धन द्वारा ठीक समय पर पहुँचकर राज्यश्री को बचाना।
- बहन को साथ लेकर कन्नौज लौटना और संयुक्त रूप से शासन करना।
- अपने सम्पूर्ण जीवन को राष्ट्र-सेवा में समर्पित करने का संकल्प।

#### Step 3: Final Answer (Formatted as per word limit):

'त्यागपथी' के चतुर्थ सर्ग में सम्राट हर्षवर्धन अपनी बहन राज्यश्री को खोजने के लिए वन-वन भटकते हैं। उन्हें एक बौद्ध भिक्षु से पता चलता है कि राज्यश्री आत्मदाह करने जा रही हैं। हर्षवर्धन शीघ्रता से पहुँचकर अपनी बहन को चिता में जलने से बचा लेते हैं। वे राज्यश्री को समझा-बुझाकर कन्नौज वापस लाते हैं और संयुक्त रूप से शासन-भार संभालते हैं। वे अपना जीवन लोक-कल्याण और राष्ट्र-सेवा में समर्पित कर देते हैं और एक आदर्श शासक के रूप में प्रसिद्धि पाते हैं।

### Quick Tip

जब किसी खण्डकाव्य के विशेष सर्ग (अध्याय) के बारे में पूछा जाए, तो अपना उत्तर केवल उसी सर्ग की घटनाओं तक सीमित रखें। पूरी कहानी लिखने से बचें।

(ख) (ii). 'त्यागपथी' खण्डकाव्य के आधार पर हर्ष का चरित्रांकन कीजिए।

**Solution:**

**Step 1: Understanding the Question:**

इस प्रश्न में 'त्यागपथी' खण्डकाव्य के नायक, सम्राट हर्षवर्धन की चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन करने के लिए कहा गया है।

**Step 2: Key Character Traits of Harsha:**

- आदर्श पुत्र एवं त्यागी भाई
- महान् योद्धा और कुशल शासक
- प्रजा-पालक और राष्ट्र-प्रेमी
- दृढ़-निश्चयी और कर्तव्यनिष्ठ

**Step 3: Final Answer (Formatted as per word limit):**

'त्यागपथी' के नायक सम्राट हर्षवर्धन एक आदर्श शासक, महान योद्धा और त्यागी पुरुष हैं। वे एक आदर्श पुत्र और अपनी बहन राज्यश्री से असीम स्नेह करने वाले भाई हैं। वे दृढ़-निश्चयी और कर्तव्यनिष्ठ हैं, जो कठिन परिस्थितियों में भी धैर्य नहीं खोते। उनका सम्पूर्ण जीवन त्याग, बलिदान और राष्ट्र-सेवा को समर्पित है। वे अपनी प्रजा के सुख-दुःख का ध्यान रखने वाले एक प्रजावत्सल राजा हैं। उनका चरित्र भारतीय संस्कृति के आदर्शों का प्रतीक है।

**Quick Tip**

किसी ऐतिहासिक पात्र का चरित्र-चित्रण करते समय, खण्डकाव्य में वर्णित घटनाओं के उदाहरण देकर उनके गुणों को प्रमाणित करना आपके उत्तर को अधिक विश्वसनीय बनाता है।

(ग) (i). 'श्रवणकुमार' खण्डकाव्य के 'आखेट' सर्ग की कथावस्तु अपने शब्दों में लिखिए।

**Solution:**

**Step 1: Understanding the Question:**

इस प्रश्न में 'श्रवणकुमार' खण्डकाव्य के 'आखेट' नामक सर्ग की कहानी को संक्षेप में लिखने के लिए कहा गया है।

**Step 2: Plot of the 'Akhodetaka' (Hunting) Canto:**

- अयोध्या के प्राकृतिक सौन्दर्य का वर्णन।

- राजा दशरथ का शिकार (आखेट) के लिए वन में जाना।
- सायंकाल सरयू नदी के तट पर किसी जानवर के पानी पीने की ध्वनि सुनना।
- शब्दभेदी बाण चलाना।
- बाण लगने पर मनुष्य की चीत्कार सुनाई देना और दशरथ का चिंतित होना।

**Step 3: Final Answer (Formatted as per word limit):**

'श्रवणकुमार' खण्डकाव्य के 'आखेट' सर्ग का आरम्भ अयोध्या के मनोहारी वर्णन से होता है। इसी सर्ग में राजा दशरथ शिकार करने के उद्देश्य से वन में जाते हैं। शाम के समय जब वे सरयू नदी के किनारे छिपे थे, उन्हें जल में पातृ डूबने की ध्वनि सुनाई देती है। वे इसे किसी जंगली हाथी की ध्वनि समझकर शब्दभेदी बाण चला देते हैं। बाण लगते ही उन्हें एक मानवीय चीत्कार सुनाई देती है, जिसे सुनकर राजा दशरथ अत्यंत चिंतित और व्याकुल हो उठते हैं।

**Quick Tip**

कथावस्तु में काव्य-सौंदर्य या प्राकृतिक वर्णन का संक्षिप्त उल्लेख करके आप अपने उत्तर को और बेहतर बना सकते हैं, जैसा कि इस सर्ग के आरम्भ में अयोध्या का वर्णन है।

(ग) (ii). 'श्रवणकुमार' खण्डकाव्य के आधार पर श्रवणकुमार की चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

**Solution:**

**Step 1: Understanding the Question:**

इस प्रश्न में खण्डकाव्य के नायक श्रवणकुमार की चारित्रिक विशेषताओं को बताने के लिए कहा गया है।

**Step 2: Key Character Traits of Shrivankumar:**

- आदर्श मातृ-पितृ भक्त
- सत्यवादी, सरल और संतोषी स्वभाव
- क्षमाशील और विनम्र
- भारतीय संस्कृति का सच्चा प्रतिनिधि

**Step 3: Final Answer (Formatted as per word limit):**

'श्रवणकुमार' खण्डकाव्य के नायक श्रवणकुमार मातृ-पितृ भक्ति के अद्वितीय प्रतीक हैं। वे अपने नेत्रहीन माता-पिता की एकमात्र आशा हैं और उनकी हर आज्ञा का पालन करते हैं। उनका स्वभाव अत्यंत सरल, संतोषी और विनम्र है। वे सत्यवादी और क्षमाशील हैं; मृत्यु के क्षण में भी वे राजा दशरथ

को क्षमा कर देते हैं। वे भारतीय संस्कृति के आदर्श पुत्र हैं, जिनका चरित्र त्याग, सेवा और कर्तव्यनिष्ठा को दर्शाता है।

### Quick Tip

किसी पात्र की सबसे प्रमुख विशेषता (जैसे श्रवणकुमार की मातृ-पितृ भक्ति) को अपने उत्तर का आधार बनाएं और फिर अन्य गुणों का उल्लेख करें। इससे उत्तर केंद्रित और प्रभावी लगता है।

(घ) (i). 'सत्य की जीत' खण्डकाव्य के आधार पर द्रौपदी का चरित्र-चित्रण कीजिए।

### Solution:

#### Step 1: Understanding the Question:

इस प्रश्न में 'सत्य की जीत' खण्डकाव्य की नायिका द्रौपदी की चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख करने के लिए कहा गया है।

#### Step 2: Key Character Traits of Draupadi:

- स्वाभिमानी एवं वीरांगना
- सत्य एवं न्याय की पक्षधर
- तर्कशील एवं वाक्पटु (बोलने में निपुण)
- निर्भीक एवं साहसी

#### Step 3: Final Answer (Formatted as per word limit):

'सत्य की जीत' की नायिका द्रौपदी एक स्वाभिमानी, साहसी और विदुषी नारी हैं। वे सत्य और न्याय की प्रतीक हैं। भरी सभा में अपने अपमान का वे निर्भीकता से प्रतिकार करती हैं। वे अपनी तर्कपूर्ण वाणी से भीष्म, द्रोण जैसे गुरुजनों को निरुत्तर कर देती हैं। वे नारी के सम्मान के लिए संघर्ष करती हैं और किसी भी परिस्थिति में अन्याय के समक्ष झुकती नहीं हैं। उनका चरित्र नारी-शक्ति और आत्म-सम्मान का एक ज्वलंत उदाहरण है।

### Quick Tip

द्रौपदी जैसे प्रखर और मुखर पात्र का चरित्र-चित्रण करते समय उनकी वाक्पटुता, तार्किकता और साहस जैसी विशेषताओं पर विशेष बल देना चाहिए, क्योंकि यही खण्डकाव्य में उनके चरित्र का मूल आधार है।

(घ) (ii). 'सत्य की जीत' खण्डकाव्य की कथावस्तु अपने शब्दों में लिखिए।

**Solution:**

**Step 1: Understanding the Question:**

इस प्रश्न में 'सत्य की जीत' खण्डकाव्य की कहानी को संक्षेप में अपने शब्दों में लिखने के लिए कहा गया है।

**Step 2: Main Plot Points:**

- द्यूत-क्रीड़ा (जुआ) में युधिष्ठिर का सब कुछ हार जाना।
- अंत में द्रौपदी को दाँव पर लगाना और हार जाना।
- दुःशासन द्वारा द्रौपदी को भरी सभा में अपमानित करना।
- द्रौपदी द्वारा अपनी अस्मिता और न्याय के लिए सभा में तर्कपूर्ण प्रश्न उठाना।
- अंततः सत्य और धर्म की विजय होना।

**Step 3: Final Answer (Formatted as per word limit):**

'सत्य की जीत' की कथावस्तु महाभारत के द्यूत-प्रसंग पर आधारित है। कौरवों द्वारा आयोजित द्यूत-क्रीड़ा में युधिष्ठिर अपना सब कुछ हारने के बाद द्रौपदी को भी दाँव पर लगाकर हार जाते हैं। दुःशासन भरी सभा में द्रौपदी का अपमान करता है। इसके विरोध में द्रौपदी सभासदों से न्याय की माँग करती है और धर्म-अधर्म पर तर्कपूर्ण प्रश्न उठाती है। उसके तर्कों और सत्य के तेज के आगे सभी मौन हो जाते हैं। अंत में, द्रौपदी के सत्य और सतीत्व की ही जीत होती है।

#### Quick Tip

कथावस्तु लिखते समय यह स्पष्ट करें कि कहानी का केंद्रीय संघर्ष क्या है। 'सत्य की जीत' में केंद्रीय संघर्ष द्रौपदी का अपने सम्मान के लिए और धर्म की स्थापना के लिए किया गया तार्किक और नैतिक संघर्ष है।

(ङ) (i). 'मुक्तियज्ञ' खण्डकाव्य के आधार पर गाँधीजी का चरित्र चित्रण कीजिए।

**Solution:**

**Step 1: Understanding the Question:**

इस प्रश्न में 'मुक्तियज्ञ' खण्डकाव्य के नायक महात्मा गाँधी की चरित्रिक विशेषताओं का वर्णन करने के लिए कहा गया है।

**Step 2: Key Character Traits of Gandhiji:**

- अलौकिक महापुरुष
- सत्य, प्रेम और अहिंसा के समर्थक
- दलितों के उद्धारक (हरिजनोद्धारक)
- हिन्दू-मुस्लिम एकता के पक्षधर
- दृढ़-प्रतिज्ञ और साहसी

**Step 3: Final Answer (Formatted as per word limit):**

'मुक्तियज्ञ' के नायक महात्मा गाँधी एक अलौकिक महापुरुष हैं, जिनमें मानवीय गुणों का समावेश है। वे सत्य, प्रेम और अहिंसा के प्रबल समर्थक हैं तथा इन्हीं शस्त्रों से ब्रिटिश शासन का सामना करते हैं। वे समाज से छुआछूत जैसी बुराई को समाप्त करने के लिए कृतसंकल्प हैं और दलितों का उद्धार करते हैं। वे हिन्दू-मुस्लिम एकता के पक्षधर हैं और एक दृढ़-निश्चयी नेता के रूप में भारत को स्वतंत्रता दिलाते हैं।

**Quick Tip**

गाँधीजी जैसे महान व्यक्तित्व का चरित्र-चित्रण करते समय, उनके मानवीय और नैतिक गुणों (जैसे- सत्य, अहिंसा, दलितोद्धार) पर विशेष ध्यान दें, क्योंकि खण्डकाव्य में इन्हीं गुणों को प्रमुखता दी गई है।

(ड) (ii). 'मुक्तियज्ञ' खण्डकाव्य का कथासार अपने शब्दों में लिखिए।

**Solution:**

**Step 1: Understanding the Question:**

इस प्रश्न में 'मुक्तियज्ञ' खण्डकाव्य की कहानी को संक्षेप में लिखने के लिए कहा गया है।

**Step 2: Main Plot Points:**

- भारत की स्वतंत्रता के लिए गाँधीजी द्वारा किया गया संघर्ष रूपा 'यज्ञ'।
- अंग्रेजों द्वारा लाया गया 'नमक कानून'।
- गाँधीजी द्वारा 'नमक कानून' तोड़ने के लिए की गई दाण्डी यात्रा।
- गाँधीजी का दलितोद्धार और समाज-सुधार के कार्य।
- 1942 का 'भारत छोड़ो आन्दोलन' और अंग्रेजों का भारत से जाना।

**Step 3: Final Answer (Formatted as per word limit):**

'मुक्तियज्ञ' खण्डकाव्य की कथावस्तु महात्मा गाँधी द्वारा चलाए गए स्वतंत्रता आन्दोलन पर आधारित है। कथा का आरम्भ अंग्रेजों के नमक कानून से होता है। गाँधीजी इस काले कानून को तोड़ने के

लिए साबरमती आश्रम से दाण्डी तक की पदयात्रा करते हैं और नमक बनाकर कानून भंग करते हैं। इसके बाद वे दलितों के उद्धार के लिए भी संघर्ष करते हैं। अंत में, 1942 के 'भारत छोड़ो आन्दोलन' के फलस्वरूप देश को स्वतंत्रता मिलती है। यह काव्य भारत की मुक्ति के लिए किए गए यज्ञ की गाथा है।

### Quick Tip

कथासार लिखते समय 'मुक्तियज्ञ' शब्द के अर्थ (मुक्ति के लिए यज्ञ) को ध्यान में रखें। अपनी प्रस्तुति को गाँधीजी के स्वतंत्रता रूपी यज्ञ के चारों ओर केंद्रित करें, जिसमें 'नमक सत्याग्रह' एक महत्वपूर्ण आहुति है।

(च) (i). 'आलोकवृत्त' खण्डकाव्य का कथानक अपने शब्दों में लिखिए।

### Solution:

#### Step 1: Understanding the Question:

इस प्रश्न में 'आलोकवृत्त' खण्डकाव्य की कहानी को संक्षेप में अपने शब्दों में लिखने के लिए कहा गया है।

#### Step 2: Main Plot Points:

- गाँधीजी के जन्म से लेकर भारत की स्वतंत्रता तक की जीवन-गाथा।
- दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद के विरुद्ध सत्याग्रह का सफल प्रयोग।
- भारत लौटकर स्वतंत्रता संग्राम का नेतृत्व करना।
- चम्पारण सत्याग्रह, असहयोग आन्दोलन, नमक सत्याग्रह, भारत छोड़ो आन्दोलन जैसी प्रमुख घटनाएँ।
- 1947 में भारत का स्वतंत्र होना, जो गाँधीजी के आलोक-वृत्त (प्रकाश-पुंज) का परिणाम है।

#### Step 3: Final Answer (Formatted as per word limit):

'आलोकवृत्त' खण्डकाव्य महात्मा गाँधी के सम्पूर्ण जीवन-वृत्त पर आधारित है। कथानक का प्रारम्भ गाँधीजी के जन्म से होता है। इसमें दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद के विरुद्ध उनके सत्याग्रह के सफल प्रयोग को दिखाया गया है। भारत लौटकर वे स्वतंत्रता संग्राम का नेतृत्व करते हैं। उनके द्वारा चलाए गए असहयोग आन्दोलन, नमक सत्याग्रह और भारत छोड़ो आन्दोलन जैसी घटनाओं का वर्णन है। अंत में, 1947 में भारत स्वतंत्र होता है और गाँधीजी के आदर्शों का प्रकाश-वृत्त चारों ओर फैल जाता है।

### Quick Tip

'आलोकवृत्त' का अर्थ है 'प्रकाश का घेरा'। कथानक लिखते समय यह दर्शाएँ कि किस प्रकार गाँधीजी के जीवन और उनके कार्यों ने पराधीनता के अंधकार को मिटाकर स्वतंत्रता का प्रकाश फैलाया।

(च) (ii). 'आलोकवृत्त' खण्डकाव्य के नायक का चरित्र-चित्रण कीजिए।

### Solution:

#### Step 1: Understanding the Question:

इस प्रश्न में 'आलोकवृत्त' खण्डकाव्य के नायक, जो कि महात्मा गाँधी हैं, की चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन करने के लिए कहा गया है।

#### Step 2: Key Character Traits of the Protagonist (Gandhiji):

- असाधारण एवं युगपुरुष
- सत्य और अहिंसा के पुजारी
- दृढ़-संकल्प और निर्भीक
- मानवता के अग्रदूत और विश्व-प्रेमी
- राष्ट्रीय एकता के समर्थक

#### Step 3: Final Answer (Formatted as per word limit):

'आलोकवृत्त' के नायक महात्मा गाँधी एक युगपुरुष हैं, जिन्होंने अपने असाधारण व्यक्तित्व से भारत को नई दिशा दी। वे सत्य और अहिंसा के पुजारी हैं और इन्हीं सिद्धांतों के बल पर उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्य को झुका दिया। वे दृढ़-संकल्प वाले व्यक्ति हैं, जो एक बार निश्चय कर लेने पर पीछे नहीं हटते। वे केवल भारत ही नहीं, बल्कि सम्पूर्ण मानवता से प्रेम करने वाले विश्व-मानव हैं। उनका चरित्र त्याग, देश-प्रेम और मानवता का संदेश देता है।

### Quick Tip

'आलोकवृत्त' के नायक के रूप में गाँधीजी का चरित्र-चित्रण करते समय, उनके व्यक्तित्व के उन पहलुओं पर प्रकाश डालें जो सम्पूर्ण विश्व के लिए प्रेरणास्रोत हैं, क्योंकि 'आलोकवृत्त' केवल भारत तक सीमित नहीं, बल्कि एक वैश्विक प्रकाश का प्रतीक है।

8. (क). दिये गये संस्कृत गद्यांश का सन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए :

धन्योऽयं भारतदेशः यत्र समुल्लसति जनमानसपावनी, भव्यभावोद्भाविनी, शब्द-सन्दोह-प्रसविनी

सुरभारती । विद्यमानेषु निखिलेष्वपि वाङ्मयेषु अस्याः वाङ्मयं सर्वश्रेष्ठं सुसम्पन्नं च वर्तते । इय-  
मेव भाषा संस्कृतनाम्नापि लोके प्रथिता अस्ति ।

**Solution:**

**Step 1: सन्दर्भ (Context):**

प्रस्तुत संस्कृत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक के 'संस्कृत दिग्दर्शिका' खण्ड में संकलित 'संस्कृतभाषा-  
याः महत्त्वम्' नामक पाठ से उद्धृत है ।

**Step 2: हिन्दी अनुवाद (Hindi Translation):**

यह भारत देश धन्य है, जहाँ जन-मानस को पवित्र करने वाली, श्रेष्ठ भावों को उत्पन्न करने वाली  
और शब्द-समूहों को जन्म देने वाली देववाणी (संस्कृत) सुशोभित है । वर्तमान में उपलब्ध सम्पूर्ण साहि-  
त्यों में इसका साहित्य सर्वश्रेष्ठ और सुसम्पन्न है । यही भाषा संसार में 'संस्कृत' नाम से भी प्रसिद्ध है ।

#### Quick Tip

अनुवाद करते समय संस्कृत के प्रत्येक शब्द के अर्थ को ध्यान में रखकर वाक्य का भावार्थ स्पष्ट  
करें । 'सुरभारती' का अर्थ 'देववाणी' या 'संस्कृत' होता है । सन्दर्भ में पाठ का नाम सही-सही लिखना  
अनिवार्य है ।

**अथवा दिये गये संस्कृत गद्यांश का सन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए :**

बौद्धयुगे इमे सिद्धान्ताः वैयक्तिकजीवनस्य अभ्युत्थानाय प्रयुक्ता आसन् । परम् इमे सिद्धान्ताः रा-  
ष्ट्राणां परस्परमैत्रीसहयोगकारणानि, विश्वबन्धुत्वस्य विश्वशान्तेश्च साधनानि सन्ति । राष्ट्रना-  
यकस्य जवाहरलालमहोदयस्य प्रधानमन्त्रित्वकाले चीनदेशेन सहभारतस्य मैत्री पञ्चशीलसि-  
द्धान्तानधिकृत्य एवाभवत् ।

**Solution:**

**Step 1: सन्दर्भ (Context):**

प्रस्तुत संस्कृत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक के 'संस्कृत दिग्दर्शिका' खण्ड में संकलित 'पञ्चशीलसि-  
द्धान्ताः' नामक पाठ से लिया गया है ।

**Step 2: हिन्दी अनुवाद (Hindi Translation):**

बौद्ध युग में ये सिद्धान्त व्यक्तिगत जीवन के उत्थान के लिए प्रयोग किये जाते थे । परन्तु आज ये सि-  
द्धान्त राष्ट्रों की आपसी मित्रता और सहयोग के कारण, विश्व-बन्धुत्व और विश्व-शान्ति के साधन  
हैं । राष्ट्रनायक श्री जवाहरलाल नेहरू महोदय के प्रधानमन्त्रित्व काल में चीन देश के साथ भारत  
की मित्रता पञ्चशील सिद्धान्तों के आधार पर ही हुई थी ।

### Quick Tip

अनुवाद करते समय ऐतिहासिक सन्दर्भों का ध्यान रखें, जैसे 'बौद्धयुगे' (बौद्ध युग में) और 'जवा-हरलालमहोदयस्य प्रधानमन्त्रित्वकाले' (जवाहरलाल नेहरू के प्रधानमन्त्रित्व काल में)। इससे अनुवाद अधिक सटीक होता है।

8. (ख). दिये गये संस्कृत पद्यांश का सन्दर्भ-सहित हिन्दी में अनुवाद कीजिए :  
सहसा विदधीत न किरयामविवेकः परमापदां पदम् ।  
वृणुते हि विमृश्यकारिणं गुणलुब्धाः स्वयमेव सम्पदः ॥

**Solution:**

**Step 1: सन्दर्भ (Context):**

प्रस्तुत श्लोक हमारी पाठ्य-पुस्तक के 'संस्कृत दिग्दर्शिका' खण्ड में संकलित 'सुभाषितरत्नानि' नामक पाठ से उद्धृत है।

**Step 2: हिन्दी अनुवाद (Hindi Translation):**

(मनुष्य को) किसी भी कार्य को बिना विचारे अचानक नहीं करना चाहिए, क्योंकि विवेकहीनता (अज्ञान) घोर विपत्तियों का स्थान है। निश्चय ही, जो व्यक्ति सोच-समझकर कार्य करता है, गुणों की लोभी सम्पत्तियाँ (अर्थात् लक्ष्मी) स्वयं ही उसका वरण कर लेती हैं (उसके पास आ जाती हैं)।

### Quick Tip

श्लोक का अनुवाद करते समय उसके अन्वय (शब्दों का सही क्रम) को समझें। यहाँ संदेश यह है कि सोच-समझकर कार्य करने वाले के पास सफलता स्वयं आती है।

अथवा दिये गये संस्कृत पद्यांश का सन्दर्भ-सहित हिन्दी में अनुवाद कीजिए :  
विरलविरलाः स्थूलास्ताराः कलाविव सज्जनाः ।  
मन इव मुनेः सर्वत्रैव प्रसन्नमभून्नभः ॥  
अपसरति च ध्वान्तं चित्तात्सतामिव दुर्जनः ।  
व्रजति च निशा क्षिप्रं लक्ष्मीः अनुद्यमिनामिव ॥

**Solution:**

**Step 1: सन्दर्भ (Context):**

प्रस्तुत श्लोक हमारी पाठ्य-पुस्तक के 'संस्कृत दिग्दर्शिका' खण्ड में संकलित 'सुभाषितरत्नानि' नामक पाठ से लिया गया है।

**Step 2: हिन्दी अनुवाद (Hindi Translation):**

(शरद ऋतु के आगमन पर) कलियुग में सज्जनों की भाँति, बड़े-बड़े तारे आकाश में कहीं-कहीं ही (वि-रले) दिखाई दे रहे हैं।

मुनि के मन की भाँति, आकाश सब ओर से स्वच्छ हो गया है।

सज्जनों के हृदय से दुष्टों की भाँति, अन्धकार दूर हो रहा है।

और उद्यमहीन (आलसी) व्यक्ति के धन की भाँति, रात्रि शीघ्रता से समाप्त हो रही है।

**Quick Tip**

इस श्लोक में अनेक उपमा अलंकार हैं। अनुवाद करते समय प्रत्येक उपमा (जैसे - 'कलाविव सज्जनाः', 'मन इव मुनेः') को स्पष्ट रूप से समझाएं। यह श्लोक शरद ऋतु के प्रातःकाल का सुन्दर वर्णन करता है।

9. (i). निम्नलिखित मुहावरों एवं लोकोक्तियों में से किसी एक का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए :

अंधे के हाथ बटेर लगना

**Solution:**

**Step 1: अर्थ (Meaning):**

अंधे के हाथ बटेर लगना मुहावरे का अर्थ है - किसी अयोग्य व्यक्ति को अनायास (बिना प्रयास के) कोई बहुमूल्य या अच्छी वस्तु मिल जाना।

**Step 2: वाक्य प्रयोग (Usage in a sentence):**

अनपढ़ रमेश की लॉटरी में कार निकल आई, यह तो वही बात हुई जैसे अंधे के हाथ बटेर लग गई हो।

**Quick Tip**

मुहावरे का वाक्य प्रयोग करते समय, वाक्य ऐसा बनाएं जिससे मुहावरे का अर्थ स्पष्ट हो जाए। वाक्य में मुहावरे का प्रयोग ज्यों का त्यों होना चाहिए, उसके अर्थ का नहीं।

9. (ii). निम्नलिखित मुहावरों एवं लोकोक्तियों में से किसी एक का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए :

गिरगिट की तरह रंग बदलना

**Solution:**

**Step 1: अर्थ (Meaning):**

गिरगिट की तरह रंग बदलना मुहावरे का अर्थ है - एक बात पर स्थिर न रहना, अवसर के अनुसार अपनी बात बदल देना ; अवसरवादी होना ।

**Step 2: वाक्य प्रयोग (Usage in a sentence):**

आज के नेता अपने स्वार्थ के लिए गिरगिट की तरह रंग बदलते हैं, उन पर विश्वास नहीं किया जा सकता ।

**Quick Tip**

इस मुहावरे का प्रयोग अक्सर नकारात्मक संदर्भ में ऐसे व्यक्ति के लिए किया जाता है जो भरोसे के लायक नहीं होता और अपने फायदे के लिए पक्ष बदलता रहता है ।

9. (iii). निम्नलिखित मुहावरों एवं लोकोक्तियों में से किसी एक का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए :

अन्त भला तो सब भला

**Solution:****Step 1: अर्थ (Meaning):**

अन्त भला तो सब भला, इस लोकोक्ति का अर्थ है - यदि किसी कार्य का परिणाम अच्छा हो, तो उस कार्य के दौरान हुई कठिनाइयों और गलतियों को भुला दिया जाता है ।

**Step 2: वाक्य प्रयोग (Usage in a sentence):**

परीक्षा की तैयारी में मुझे बहुत कठिनाई हुई, लेकिन जब मैं प्रथम श्रेणी में पास हो गया तो मेरी सारी थकान दूर हो गई, सच है अन्त भला तो सब भला ।

**Quick Tip**

लोकोक्ति एक पूरा वाक्य होती है और इसका प्रयोग किसी बात का समर्थन करने या निष्कर्ष निकालने के लिए किया जाता है । इसका प्रयोग अक्सर वाक्य के अंत में होता है ।

9. (iv). निम्नलिखित मुहावरों एवं लोकोक्तियों में से किसी एक का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए :

जंगल में मोर नाचा किसने देखा

**Solution:**

**Step 1: अर्थ (Meaning):**

जंगल में मोर नाचा किसने देखा, इस लोकोक्ति का अर्थ है - किसी ऐसे स्थान पर अपने गुण का प्रदर्शन करना जहाँ उसकी कद्र करने वाला या उसे देखने वाला कोई न हो, जिससे उस गुण का कोई लाभ न मिले।

**Step 2: वाक्य प्रयोग (Usage in a sentence):**

गायक ने एक छोटे से गाँव में बहुत अच्छा कार्यक्रम प्रस्तुत किया, पर वहाँ संगीत समझने वाला कोई नहीं था ; यह तो वही बात हुई कि जंगल में मोर नाचा किसने देखा।

**Quick Tip**

इस लोकोक्ति का प्रयोग यह बताने के लिए किया जाता है कि किसी भी कला या गुण का प्रदर्शन सही दर्शक या पारखी के सामने ही सार्थक होता है।

अपरिचित पद्यांश पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

मुझे भ्रम होता है कि प्रत्येक पत्थर में  
चमकता हीरा है,  
हर-एक छाती में आत्मा अतीत है,  
प्रत्येक सुखमित में विलीन संतिनता है,  
मुझे भ्रम होता है कि प्रत्येक पानी में

10. (i). उपर्युक्त पद्यांश में कवि ने क्या सन्देश दिया है ?

**Solution:****Step 1: Understanding the Question:**

इस प्रश्न में दिए गए अपठित पद्यांश का मूल संदेश पूछा गया है।

**Step 2: Explanation of the Message:**

उपर्युक्त पद्यांश में कवि ने यह संदेश दिया है कि हमें किसी भी व्यक्ति या वस्तु को उसके बाहरी रूप से नहीं आंकना चाहिए। कवि का मानना है कि प्रत्येक साधारण दिखने वाली वस्तु में असाधारण गुण छिपे होते हैं और प्रत्येक व्यक्ति के भीतर गहरी भावनाएँ और महान संभावनाएँ होती हैं। कवि संसार को सहानुभूति और सकारात्मक दृष्टि से देखने का संदेश देते हैं, ताकि हम साधारण में छिपी महानता को पहचान सकें।

**Step 3: Final Answer:**

कवि का संदेश है कि हर साधारण चीज में कुछ असाधारण छिपा है ; हर पत्थर में हीरे की चमक, हर इंसान में एक बेचैन आत्मा और हर आवाज में पीड़ा का एक महाकाव्य है। हमें संसार को गहरी सहानुभूति से देखना चाहिए।

### Quick Tip

पद्यांश का संदेश लिखते समय कवि की मुख्य भावना (जैसे- आशावाद, सहानुभूति, मानवतावाद) को पकड़ने का प्रयास करें और उसे अपने शब्दों में लिखें।

10. (ii). 'मुझे भ्रम होता है कि प्रत्येक पत्थर में चमकता हीरा है।' इसका आशय स्पष्ट कीजिए।

**Solution:**

**Step 1: Understanding the Question:**

इस प्रश्न में पद्यांश की एक विशेष पंक्ति का भावार्थ पूछा गया है।

**Step 2: Explanation of the Line:**

इस पंक्ति का आशय यह है कि जिस प्रकार एक साधारण पत्थर के भीतर बहुमूल्य हीरा छिपा होता है, उसी प्रकार प्रत्येक सामान्य और महत्वहीन समझे जाने वाले व्यक्ति के भीतर भी अनमोल गुण, प्रतिभा और संभावनाएं छिपी होती हैं। कवि का 'भ्रम' वास्तव में उनकी गहरी अंतर्दृष्टि है, जो उन्हें साधारण के पीछे छिपी असाधारणता को देखने में मदद करती है। यह पंक्ति व्यक्ति के आंतरिक मूल्य और छिपी हुई क्षमता को पहचानने पर बल देती है।

**Step 3: Final Answer:**

इस पंक्ति का आशय है कि प्रत्येक साधारण व्यक्ति या वस्तु में महान गुण और संभावनाएं छिपी होती हैं, जिन्हें पहचानने के लिए एक पारखी दृष्टि की आवश्यकता होती है।

### Quick Tip

किसी काव्य पंक्ति का आशय स्पष्ट करते समय उसके प्रतीकात्मक अर्थ को समझाएं। यहाँ 'पत्थर' साधारण व्यक्ति का प्रतीक है और 'हीरा' उसके आंतरिक गुणों और क्षमता का प्रतीक है।

10. (iii). रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(रेखांकित अंश : मुझे भ्रम होता है कि प्रत्येक वाणी में / महाकाव्य पीड़ा है,)

**Solution:**

**Step 1: Understanding the Question:**

इस प्रश्न में पद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या करने के लिए कहा गया है।

**Step 2: Detailed Explanation:**

**व्याख्या :** कवि इन पंक्तियों में कहना चाहते हैं कि उन्हें ऐसा महसूस होता है कि हर व्यक्ति की आवाज

(वाणी) में एक 'महाकाव्य' जितनी विशाल और गहरी 'पीड़ा' छिपी हुई है। इसका अर्थ है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में अनगिनत दुःख, संघर्ष और वेदनाओं से गुजरता है। उसकी कहानी इतनी बड़ी और मार्मिक होती है कि उस पर एक पूरा महाकाव्य लिखा जा सकता है। कवि की यह अनुभूति उनकी गहरी संवेदनशीलता और सहानुभूति को दर्शाती है, जिससे वे दूसरों के अनकहे दुःख को भी समझ लेते हैं।

### Step 3: Final Answer:

रेखांकित अंश में कवि कहते हैं कि हर व्यक्ति की आवाज में अपार दुःख और दर्द छिपा है, जो इतना गहरा और विस्तृत है कि उसकी तुलना एक महाकाव्य से की जा सकती है। यह मानव जीवन में व्याप्त सार्वभौमिक पीड़ा को दर्शाता है।

### Quick Tip

व्याख्या करते समय शब्दों के गहरे अर्थ को खोलें। 'महाकाव्य पीड़ा' केवल 'बहुत दुःख' नहीं है, बल्कि यह एक ऐसी पीड़ा है जिसमें विस्तार, गहराई और एक पूरी कहानी समाहित हो।

11. (क) (i). निम्नलिखित शब्द-युग्मों का सही अर्थ चयन करके लिखिए :  
अंस-अंश

- (A) पूर्ण और भाग
- (B) कन्धा और हिस्सा
- (C) भाग और कन्धा
- (D) इनमें से कोई नहीं

**Correct Answer:** (B) कन्धा और हिस्सा

**Solution:**

### Step 1: Understanding the Words:

यह प्रश्न श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्दों पर आधारित है, जो सुनने में समान लगते हैं परन्तु उनके अर्थ भिन्न होते हैं।

**अंस (Anas):** इस शब्द का अर्थ 'कन्धा' (Shoulder) होता है।

**अंश (Ansh):** इस शब्द का अर्थ 'भाग' या 'हिस्सा' (Part/Portion) होता है।

### Step 2: Matching with Options:

दिए गए अर्थों के अनुसार, सही क्रम 'कन्धा' और 'हिस्सा' है।

विकल्प (B) में यह क्रम सही दिया गया है।

### Step 3: Final Answer:

अतः, 'अंस-अंश' का सही अर्थ है 'कन्धा और हिस्सा'। विकल्प (B) सही है।

### Quick Tip

'स' और 'श' के उच्चारण और अर्थ के सूक्ष्म अंतर पर ध्यान दें। ऐसे शब्द-युग्म परीक्षाओं में अक्सर पूछे जाते हैं, जैसे - कुल (वंश) और कूल (किनारा), दिन (दिवस) और दीन (गरीब)।

11. (क) (ii). निम्नलिखित शब्द-युग्मों का सही अर्थ चयन करके लिखिए :  
वात-बात

- (A) हवा और वार्ता
- (B) पवन और निश्चल
- (C) अनल और वायु
- (D) इनमें से कोई नहीं

**Correct Answer:** (A) हवा और वार्ता

**Solution:**

**Step 1: Understanding the Words:**

यह प्रश्न भी श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्दों पर आधारित है।

वात (Vaat): इस शब्द का अर्थ 'हवा', 'वायु' या 'पवन' (Air/Wind) होता है।

बात (Baat): इस शब्द का अर्थ 'वार्ता' या 'कथन' (Talk/Conversation) होता है।

**Step 2: Matching with Options:**

दिए गए अर्थों के अनुसार, सही क्रम 'हवा' और 'वार्ता' है।

विकल्प (A) में यह क्रम सही दिया गया है।

**Step 3: Final Answer:**

अतः, 'वात-बात' का सही अर्थ है 'हवा और वार्ता'। विकल्प (A) सही है।

### Quick Tip

शब्दों के तत्सम और तद्भव रूप को समझें। 'वात' एक तत्सम (संस्कृत) शब्द है जिसका अर्थ वायु है, जबकि 'बात' एक तद्भव शब्द है जो संस्कृत के 'वार्ता' से बना है।

11. (ख). निम्नलिखित में से किसी एक शब्द के दो अर्थ लिखिए :

- (i) सुरभि (ii) वारिद (iii) नीरज (iv) विधि

**Solution:**

**Step 1: Understanding the Question:**

इस प्रश्न में दिए गए शब्दों में से किसी एक के दो अलग-अलग अर्थ (अनेकार्थी शब्द) लिखने हैं। यहाँ सभी के अर्थ दिए जा रहे हैं।

**Step 2: Meanings of the Words:****(i) सुरभि :**

1. सुगन्ध (Fragrance)
2. गाय (Cow) (विशेषकर कामधेनु गाय)

**(ii) वारिद :** (वारि = जल, द = देने वाला)

1. बादल (Cloud)
2. समुद्र (Sea/Ocean)

**(iii) नीरज :** (नीर = जल, ज = जन्मा हुआ)

1. कमल (Lotus)
2. मोती (Pearl)

**(iv) विधि :**

1. तरीका / रीति (Method/Procedure)
2. कानून (Law)
3. ब्रह्मा (The creator God, Brahma)
4. भाग्य (Destiny)

**Quick Tip**

अनेकार्थी शब्दों का ज्ञान भाषा की गहरी समझ के लिए आवश्यक है। शब्दों के यौगिक अर्थ (जैसे वारिद, नीरज) को समझने से उनके अर्थों का अनुमान लगाना आसान हो जाता है।

11. (ग) (i). निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए एक शब्द का चयन करके लिखिए :  
जिसका कहीं भी अन्त न हो

- (A) अनन्त
- (B) अगण्य
- (C) असंख्य
- (D) इनमें से कोई नहीं

**Correct Answer:** (A) अनन्त

**Solution:**

'जिसका कहीं भी अन्त न हो' वाक्यांश के लिए एक शब्द है अनन्त (अन् + अन्त = जिसका अन्त न हो)।

अन्य विकल्प :

अगण्य : जिसकी गणना न की जा सके।

असंख्य : जो संख्या में बहुत अधिक हो।  
अतः, सही विकल्प (A) है।

11. (ग) (ii). 'जो बूढ़ा न हो'

- (A) अमर
- (B) अखण्ड
- (C) अजर
- (D) इनमें से कोई नहीं

**Correct Answer:** (C) अजर

**Solution:**

'जो बूढ़ा न हो' वाक्यांश के लिए एक शब्द है अजर (अ + जर = जिसे बुढ़ापा न आए)।  
अन्य विकल्प :  
अमर : जो कभी न मरे।  
अखण्ड : जिसके टुकड़े न किए जा सकें।  
अतः, सही विकल्प (C) है।

#### Quick Tip

'अजर' और 'अमर' शब्दों में अंतर को समझना महत्वपूर्ण है। 'अजर' का संबंध उम्र (बुढ़ापा) से है, जबकि 'अमर' का संबंध मृत्यु से है। देवता अजर-अमर दोनों माने जाते हैं।

11. (घ). निम्नलिखित में से किन्हीं दो वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए :

- (i) मीरा कृष्ण भक्त कवियित्री है।
- (ii) मेरा बाल सफेद हो रहा है।
- (iii) वह नदी को गया।
- (iv) मोहन मेरा कनिष्ठ भ्राता है।

**Solution:**

(i) अशुद्ध वाक्य : मीरा कृष्ण भक्त कवियित्री है।

शुद्ध वाक्य : मीरा कृष्ण भक्त कवियित्री हैं।

(कारण : 'कवियित्री' की वर्तनी अशुद्ध है। सम्मान देने के लिए 'हैं' का प्रयोग उचित है।)

(ii) अशुद्ध वाक्य : मेरा बाल सफेद हो रहा है।

शुद्ध वाक्य : मेरे बाल सफेद हो रहे हैं।

(कारण : 'बाल' शब्द हिन्दी में बहुवचन के रूप में प्रयुक्त होता है, इसलिए किर्या और सर्वनाम भी बहुवचन होंगे।)

(iii) अशुद्ध वाक्य : वह नदी को गया ।

शुद्ध वाक्य : वह नदी पर गया ।

(कारण : यहाँ 'को' कारक चिह्न का प्रयोग अनुचित है । सही कारक 'पर' होगा ।)

(iv) अशुद्ध वाक्य : मोहन मेरा कनिष्ठ भ्राता है ।

शुद्ध वाक्य : मोहन मेरा कनिष्ठ भ्राता है ।

(कारण : 'कनिष्ठ' की वर्तनी अशुद्ध है । सही शब्द 'कनिष्ठ' (ठ) होता है ।)

### Quick Tip

वाक्य शुद्धि के लिए वर्तनी, लिंग, वचन, कारक और पदक्रम के नियमों का ध्यान रखना आवश्यक है । विशेषकर 'कवयित्री', 'आशीर्वाद', 'शृंगार' जैसे शब्दों की सही वर्तनी का अभ्यास करें ।

12. (क). 'हास्य' रस का लक्षण और एक उदाहरण लिखिए ।

**Solution:**

**Step 1: लक्षण (Definition):**

जब किसी व्यक्ति या वस्तु की विकृत वेशभूषा, वाणी, चेष्टा या आकार को देखकर हृदय में जो विनोद-पूर्ण भाव उत्पन्न होता है, उसे 'हास्य रस' कहते हैं । इसका स्थायी भाव 'हास' है । यही हास नामक स्थायी भाव जब विभाव, अनुभाव और संचारी भाव से पुष्ट होता है, तब हास्य रस की निष्पत्ति होती है ।

**Step 2: उदाहरण (Example):**

सीस पर गंगा हँसै, भुजनि भुजंगा हँसै,  
हास ही को दंगा भयो, नंगा के विवाह में ।

**स्पष्टीकरण :**

स्थायी भाव : हास ।

विभाव :

आलम्बन : शिवजी का विचित्र रूप ।

उद्दीपन : शिवजी की विचित्र वेशभूषा और अङ्गुलि ।

अनुभाव : गंगा का हँसना, भुजंगों का हँसना, उपस्थित लोगों का हँसना ।

संचारी भाव : हर्ष, चपलता, उत्सुकता आदि ।

अतः, यहाँ हास्य रस है ।

### Quick Tip

हास्य रस का उदाहरण देते समय ऐसा उदाहरण चुनें जो सरल हो और जिसमें स्थायी भाव, विभाव, अनुभाव और संचारी भाव स्पष्ट रूप से दिखाई दें। स्पष्टीकरण लिखने से आपको पूरे अंक मिलने की संभावना बढ़ जाती है।

12. (क). 'शान्त' रस का लक्षण और एक उदाहरण लिखिए।

**Solution:**

**Step 1: लक्षण (Definition):**

जब संसार की नश्वरता, तत्त्व-ज्ञान की प्राप्ति और वैराग्य होने से मन को जो शान्ति मिलती है, वहाँ 'शान्त रस' की उत्पत्ति होती है। इसका स्थायी भाव 'निर्वेद' (वैराग्य) है। जब निर्वेद नामक स्थायी भाव विभाव, अनुभाव और संचारी भाव से पुष्ट होता है, तब शान्त रस की निष्पत्ति होती है।

**Step 2: उदाहरण (Example):**

जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं मैं नाहिं।  
सब अँधियारा मिटि गया, जब दीपक देख्या माहिं।।

**स्पष्टीकरण :**

स्थायी भाव : निर्वेद (वैराग्य)।

विभाव :

आलम्बन : ईश्वर की प्राप्ति, सांसारिक अहंकार का नाश।

उद्दीपन : सत्संग, ईश्वर-भक्ति, ज्ञान का प्रकाश।

अनुभाव : मन की शान्ति, अहंकार का मिट जाना।

संचारी भाव : धृति, मति, हर्ष आदि।

अतः, यहाँ शान्त रस है।

### Quick Tip

शान्त रस के उदाहरण के लिए कबीर, रहीम या तुलसीदास के वैराग्य और भक्ति से संबंधित दोहे उत्तम विकल्प हैं। ये याद करने में भी सरल होते हैं और इनका भाव स्पष्ट होता है।

12. (ख). 'यमक' अलंकार का लक्षण और एक उदाहरण लिखिए।

**Solution:**

**Step 1: लक्षण (Definition):**

जब काव्य में कोई शब्द एक से अधिक बार आए और प्रत्येक बार उसका अर्थ भिन्न (अलग) हो, तो

वहाँ 'यमक अलंकार' होता है।

**Step 2: उदाहरण (Example):**

कनक कनक ते सौ गुनी, मादकता अधिकाय।

वा खाये बौराय जग, या पाये बौराय।।

**स्पष्टीकरण :**

इस उदाहरण में 'कनक' शब्द दो बार आया है।

पहले 'कनक' का अर्थ है - सोना (Gold)।

दूसरे 'कनक' का अर्थ है - धतूरा (a poisonous plant)।

चूंकि एक ही शब्द दो बार प्रयुक्त हुआ है और दोनों बार अर्थ अलग-अलग है, अतः यहाँ यमक अलंकार है।

**Quick Tip**

यमक और श्लेष अलंकार में भ्रमित न हों। यमक में शब्द एक से अधिक बार आता है और हर बार अर्थ अलग होता है, जबकि श्लेष में शब्द एक ही बार आता है और उसके एक से अधिक अर्थ होते हैं।

**12. (ख). 'उपमा' अलंकार का लक्षण और एक उदाहरण लिखिए।**

**Solution:**

**Step 1: लक्षण (Definition):**

जब काव्य में किसी एक वस्तु या व्यक्ति की तुलना किसी दूसरी प्रसिद्ध वस्तु या व्यक्ति से उसके रूप, गुण या धर्म के आधार पर की जाती है, तो वहाँ 'उपमा अलंकार' होता है।

उपमा के चार अंग होते हैं:

1. उपमेय : जिसकी तुलना की जाए।
2. उपमान : जिससे तुलना की जाए।
3. वाचक शब्द : समानता बताने वाले शब्द (जैसे- सा, सी, सम, सरिस)।
4. साधारण धर्म: वह गुण जिसके आधार पर तुलना की जाए।

**Step 2: उदाहरण (Example):**

पीपर पात सरिस मन डोला।

**स्पष्टीकरण :**

उपमेय : मन (मन की तुलना की जा रही है)।

उपमान : पीपर पात (पीपल के पत्ते से तुलना की जा रही है)।

वाचक शब्द : सरिस (समानता बताने वाला शब्द)।

साधारण धर्म: डोला (डोलना/हिलना, यह गुण मन और पत्ते दोनों में है)।

चूंकि यहाँ उपमा के चारों अंग उपस्थित हैं, अतः यह पूर्णोपमा अलंकार का उदाहरण है।

### Quick Tip

उपमा अलंकार को पहचानने का सबसे सरल तरीका है वाचक शब्दों को खोजना। यदि पंक्ति में 'सा', 'सी', 'से', 'सम', 'सरिस', 'जैसा', 'ज्यों' जैसे शब्द आएँ तो वहाँ उपमा अलंकार होने की प्रबल संभावना होती है।

12. (ग). 'सोरठा' छन्द का लक्षण और एक उदाहरण लिखिए।

**Solution:**

**Step 1: लक्षण (Definition):**

सोरठा एक अर्धसम मात्रिक छन्द है। यह दोहा छन्द का ठीक उल्टा होता है। इसके चार चरण होते हैं। इसके प्रथम और तृतीय चरण में 11-11 मात्राएँ तथा द्वितीय और चतुर्थ चरण में 13-13 मात्राएँ होती हैं। इसके विषम चरणों (पहले और तीसरे) के अन्त में गुरु-लघु (ऽ ऽ) आता है।

**Step 2: उदाहरण (Example):**

जेहि सुमिरत सिधि होइ, गन नायक करिबर बदन।  
करहु अनुग्रह सोइ, बुद्धि रासि सुभ गुन सदन ॥

**मात्रा गणना :**

जेहि सुमिरत सिधि होइ (2+1+1+1+1+1+1+1+2 = 11)

गन नायक करिबर बदन (1+1+2+1+1+1+1+1+1+1+1+1 = 13)

करहु अनुग्रह सोइ (1+1+1+1+2+1+1+2 = 11)

बुद्धि रासि सुभ गुन सदन (1+1+2+1+1+1+1+1+1+1+1+1+1 = 13)

### Quick Tip

यदि आपको दोहा छन्द का लक्षण याद है, तो बस उसे उल्टा कर दें, वही सोरठा का लक्षण है। दोहा में 13, 11 मात्राएँ होती हैं, जबकि सोरठा में 11, 13 मात्राएँ होती हैं।

12. (ग). 'कुण्डलिया' छन्द का लक्षण और एक उदाहरण लिखिए।

**Solution:**

**Step 1: लक्षण (Definition):**

कुण्डलिया एक विषम मात्रिक छन्द है। यह एक दोहा और एक रोला को मिलाकर बनता है। इसमें छः चरण होते हैं और प्रत्येक चरण में 24 मात्राएँ होती हैं। इसकी सबसे बड़ी पहचान यह है कि यह छन्द जिस शब्द से प्रारम्भ होता है, उसी शब्द से समाप्त भी होता है। साथ ही, दोहे का चौथा चरण, रोला

के प्रथम चरण में दोहराया जाता है।

**Step 2: उदाहरण (Example):**

साईं बैर न कीजिये, गुरु, पंडित, कवि, यार।  
बेटा, बनिता, पौरिया, यज्ञ करावन हार।।  
यज्ञ करावन हार, राजमंतरी जो होई।  
विप्र, पड़ोसी, वैद्य, आपकी तपै रसोई।।  
कह गिरिधर कविराय, जुगन सों यह चलि आई।  
इन तेरह सों तरह, दिये बनि आवै साईं।।

**स्पष्टीकरण :**

यह छन्द 'साईं' शब्द से प्रारम्भ हुआ है और 'साईं' शब्द पर ही समाप्त हुआ है। दोहे का चौथा चरण 'यज्ञ करावन हार' रोला के प्रारम्भ में दोहराया गया है। अतः यह कुण्डलिया छन्द है।

**Quick Tip**

कुण्डलिया छन्द को पहचानना बहुत आसान है। बस यह देखें कि क्या पहला और आखिरी शब्द समान है और क्या छन्द में छः पंक्तियाँ हैं। यदि हाँ, तो वह कुण्डलिया ही है।

13. (क). अपनी गली/मोहल्ले की नालियों की सफाई हेतु नगर निगम के स्वास्थ्य अधिकारी को पत्र लिखिए।

**Solution:**

सेवा में,  
श्रीमान स्वास्थ्य अधिकारी,  
नगर निगम,  
प्रयागराज (या कोई अन्य शहर)।

**विषय :** मोहल्ले की नालियों की सफाई एवं कीटनाशक के छिड़काव हेतु प्रार्थना-पत्र।

महोदय,  
सविनय निवेदन है कि हम अशोक नगर, वार्ड संख्या-5 के निवासी हैं। हम आपका ध्यान हमारे मोहल्ले में व्याप्त गंदगी और स्वच्छता की समस्या की ओर आकर्षित करना चाहते हैं।

हमारे मोहल्ले की नालियाँ पिछले कई हफ्तों से साफ नहीं हुई हैं, जिस कारण उनमें कूड़ा-करकट और गंदा पानी जमा हो गया है। इस रुके हुए पानी से तीव्र दुर्गंध आ रही है, जिससे सड़क पर चलना भी मुश्किल हो गया है। इसके अतिरिक्त, यह गंदा पानी मच्छरों और अन्य कीटाणुओं के पनपने का केंद्र बन गया है, जिससे मलेरिया, डेंगू जैसी गंभीर बीमारियों के फैलने का खतरा बढ़ गया है।

अतः, आपसे विनम्र अनुरोध है कि कृपया इस मामले को गंभीरता से लेते हुए हमारे मोहल्ले की नालियों की तत्काल सफाई करवाने और कीटनाशक दवा का छिड़काव करवाने की कृपा करें, ताकि हम एक स्वच्छ और स्वस्थ वातावरण में रह सकें।

आपकी इस कृपा के लिए हम सभी मोहल्लेवासी आपके आभारी रहेंगे।

सधन्यवाद।

भवदीय,  
समस्त निवासीगण,  
अशोक नगर, वार्ड संख्या-5,  
प्रयागराज।  
दिनांक : [आज की तारीख]

#### Quick Tip

औपचारिक पत्र लिखते समय भाषा सरल और शिष्ट रखें। पत्र में विषय का उल्लेख स्पष्ट रूप से करें। समस्या का सटीक वर्णन करें और अंत में आप क्या समाधान चाहते हैं, उसे विनम्रतापूर्वक लिखें।

13. (ख). बैंक से किसी व्यवसाय को करने के लिए ऋण प्राप्ति हेतु आवेदन-पत्र लिखिए।

**Solution:**

सेवा में,  
श्रीमान शाखा प्रबंधक,  
भारतीय स्टेट बैंक,  
सिविल लाइन्स शाखा,  
आगरा (या कोई अन्य शहर)।

**विषय :** व्यवसाय हेतु ऋण प्राप्ति के संबंध में आवेदन-पत्र।

महोदय,  
सविनय निवेदन है कि मैं, [आपका नाम], [आपके पिता का नाम] का पुत्र/पुत्री, [आपका पता] का निवासी हूँ। मैंने इसी वर्ष [विश्वविद्यालय का नाम] से बी.कॉम. की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की है।

मैं अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद अपना स्वयं का एक छोटा 'डेयरी फार्म' का व्यवसाय शुरू करना चाहता हूँ। इस व्यवसाय की पूरी योजना मैंने तैयार कर ली है और इसके लिए आवश्यक स्थान एवं अन्य संसाधन भी उपलब्ध हैं। इस योजना के अनुसार, इस व्यवसाय को आरम्भ करने में लगभग ₹5,00,000 (पाँच लाख रुपये) का अनुमानित व्यय है। मेरे पास ₹1,00,000 (एक लाख रुपये) की व्यक्तिगत पूँजी है

और शेष ₹4,00,000 (चार लाख रुपये) की धनराशि मुझे ऋण के रूप में चाहिए।

अतः, आपसे विनम्र अनुरोध है कि कृपया मेरे आवेदन-पत्र पर विचार करते हुए मुझे प्रधानमंत्री मुद्रा योजना (या किसी अन्य योजना) के अंतर्गत ₹4,00,000 का ऋण स्वीकृत करने की कृपा करें। मैं आपको विश्वास दिलाता/दिलाती हूँ कि मैं बैंक के सभी नियमों का पालन करूँगा/करूँगी और ऋण की किश्तें समय पर चुकाऊँगा/चुकाऊँगी। व्यवसाय योजना की प्रति और अन्य आवश्यक प्रपत्र इस आवेदन-पत्र के साथ संलग्न हैं।

आपकी शीघ्र एवं सकारात्मक कार्यवाही की अपेक्षा है।

सधन्यवाद।

**संलग्नक :**

1. व्यवसाय योजना की प्रति
2. आधार कार्ड की प्रति
3. शैक्षिक प्रमाण-पत्रों की प्रति

प्रार्थी,  
आपका नाम

आपका पता

मोबाइल नंबर

दिनांक : [आज की तारीख]

#### Quick Tip

ऋण के लिए आवेदन करते समय, पत्र में अपनी योग्यता, व्यवसाय की योजना, आवश्यक ऋण राशि और उसे चुकाने की अपनी क्षमता का स्पष्ट उल्लेख करें। आवश्यक दस्तावेजों की सूची (संलग्नक) लिखना न भूलें।

#### 14. (i). बेरोजगारी की समस्या और समाधान

**Solution:**

**प्रस्तावना**

बेरोजगारी का अर्थ है किसी योग्य और काम करने के इच्छुक व्यक्ति को उसकी योग्यता के अनुसार रोजगार का न मिलना। आज बेरोजगारी भारत ही नहीं, बल्कि विश्व के अनेक देशों के लिए एक गंभीर समस्या बन चुकी है। यह न केवल व्यक्ति के आर्थिक जीवन को प्रभावित करती है, बल्कि उसके मानसिक स्वास्थ्य और सामाजिक सम्मान पर भी गहरा आघात करती है।

## बेरोजगारी के प्रमुख कारण

1. **जनसंख्या वृद्धि** : भारत में तेजी से बढ़ती जनसंख्या के अनुपात में रोजगार के अवसरों का सृजन नहीं हो पा रहा है, जो बेरोजगारी का सबसे बड़ा कारण है।
2. **दोषपूर्ण शिक्षा प्रणाली** : हमारी शिक्षा प्रणाली सैद्धांतिक ज्ञान पर अधिक जोर देती है, जबकि व्यावसायिक और तकनीकी शिक्षा का अभाव है। इस कारण शिक्षित युवक भी रोजगार के योग्य नहीं बन पाते।
3. **कुटीर उद्योगों का पतन** : औद्योगीकरण और मशीनीकरण के कारण छोटे और घरेलू उद्योग समाप्त हो गए हैं, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में बेरोजगारी बढ़ी है।
4. **कृषि का पिछड़ापन** : भारतीय कृषि अभी भी मानसून पर निर्भर है और पिछड़ी हुई है, जिससे यह केवल मौसमी रोजगार ही प्रदान कर पाती है।

## बेरोजगारी के दुष्प्रभाव

बेरोजगारी के कारण देश में गरीबी, भुखमरी और कुपोषण जैसी समस्याएँ बढ़ती हैं। निराश होकर युवा वर्ग अपराध और नशे की ओर अग्रसर होता है, जिससे सामाजिक अशांति फैलती है। यह देश की आर्थिक प्रगति में भी एक बड़ी बाधा है।

## समाधान के उपाय

1. **जनसंख्या नियंत्रण** : बेरोजगारी को नियंत्रित करने के लिए जनसंख्या वृद्धि पर प्रभावी रोक लगाना अत्यंत आवश्यक है।
2. **शिक्षा प्रणाली में सुधार** : शिक्षा को व्यावसायिक बनाया जाना चाहिए और छात्रों को कौशल विकास (Skill Development) का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।
3. **कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहन** : सरकार को लघु एवं कुटीर उद्योगों को बढ़ावा देना चाहिए ताकि ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर बढ़ें।
4. **स्वरोजगार को बढ़ावा** : युवाओं को नौकरी खोजने के बजाय 'स्टार्ट-अप' और स्वरोजगार के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए और इसके लिए उन्हें आसान शर्तों पर ऋण उपलब्ध कराना चाहिए।

## उपसंहार

बेरोजगारी एक राष्ट्रीय समस्या है और इसे केवल सरकार के भरोसे नहीं छोड़ा जा सकता। सरकार और समाज के सम्मिलित प्रयासों से ही इस समस्या का समाधान संभव है। यदि शिक्षा प्रणाली में सुधार और कौशल विकास पर ध्यान दिया जाए, तो निश्चित रूप से भारत इस समस्या पर विजय प्राप्त कर सकता है।

### Quick Tip

निबंध लिखते समय उसे प्रस्तावना, मुख्य भाग (कारण, दुष्प्रभाव, समाधान) और उपसंहार जैसे भागों में विभाजित करें। मुख्य बिंदुओं को रेखांकित करने से निबंध अधिक प्रभावशाली लगता है।

## 14. (ii). साहित्य समाज का दर्पण है

### Solution:

#### प्रस्तावना

"साहित्य समाज का दर्पण है" - यह उक्ति साहित्य और समाज के गहरे और अटूट संबंध को व्यक्त करती है। जिस प्रकार दर्पण किसी वस्तु का यथार्थ प्रतिबिंब दिखाता है, उसी प्रकार साहित्य भी अपने समय के समाज का सच्चा चित्र प्रस्तुत करता है। किसी भी युग के साहित्य को पढ़कर हम उस युग की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों को भली-भाँति समझ सकते हैं।

#### साहित्य में समाज का प्रतिबिंब

साहित्यकार समाज का ही एक अंग होता है। वह जो कुछ भी देखता, सुनता और अनुभव करता है, उसे अपनी कल्पना और संवेदना के रंग में रंगकर अपनी रचनाओं में व्यक्त करता है। प्रेमचंद की कहानियाँ और उपन्यास तत्कालीन भारतीय ग्रामीण समाज के शोषण, गरीबी और जाति-प्रथा का जीवंत दस्तावेज हैं। इसी प्रकार, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के नाटकों में तत्कालीन समाज की कुरीतियों और पराधीनता की पीड़ा का मार्मिक चित्रण मिलता है। तुलसीदास के 'रामचरितमानस' में हम तत्कालीन हिन्दू समाज के आदर्शों और जीवन-मूल्यों की झाँकी देख सकते हैं।

#### साहित्य का समाज पर प्रभाव

साहित्य केवल समाज का दर्पण ही नहीं है, बल्कि वह एक दीपक भी है जो समाज को सही दिशा दिखाता है। साहित्य समाज की समस्याओं को केवल चित्रित ही नहीं करता, बल्कि उनके समाधान की प्रेरणा भी देता है। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान मैथिलीशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी जैसे कवियों की रचनाओं ने देशवासियों में राष्ट्रीय चेतना जगाने का कार्य किया। साहित्य समाज की सोई हुई चेतना को जगाता है, उसमें मानवीय मूल्यों का संचार करता है और उसे प्रगति के पथ पर अग्रसर करता है।

#### उपसंहार

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि साहित्य और समाज का संबंध अन्योन्याश्रित है। साहित्य समाज से प्रेरणा लेता है और समाज साहित्य से मार्गदर्शन प्राप्त करता है। एक सजग साहित्यकार अपने युग की समस्याओं के प्रति आँखें बंद नहीं कर सकता। वह अपनी लेखनी से समाज की अच्छाइयों और बुराइयों, दोनों को उजागर करता है और एक बेहतर समाज के निर्माण में अपना अमूल्य योगदान देता है। अतः, यह कहना सर्वथा उचित है कि "साहित्य समाज का दर्पण है"।

#### Quick Tip

इस प्रकार के विषय पर निबंध लिखते समय, अपनी बात को प्रमाणित करने के लिए विभिन्न साहित्यकारों और उनकी रचनाओं के उदाहरण अवश्य दें। इससे आपका निबंध अधिक प्रामाणिक और ज्ञानवर्धक बनेगा।

## 14. (iii). राष्ट्रीय एकता – वर्तमान समय की अनिवार्य आवश्यकता

## Solution:

### प्रस्तावना

राष्ट्रीय एकता का अर्थ है देश के सभी निवासियों में जाति, धर्म, भाषा और क्षेत्र के भेदभावों को भुलाकर आपसी प्रेम, सद्भाव और भाईचारे की भावना का होना। भारत एक विशाल देश है, जहाँ अनेक धर्मों, जातियों, भाषाओं और संस्कृतियों के लोग एक साथ रहते हैं। इस विविधता में एकता ही हमारी सबसे बड़ी शक्ति है। वर्तमान समय में जब देश आंतरिक और बाह्य चुनौतियों का सामना कर रहा है, तब राष्ट्रीय एकता की आवश्यकता और भी बढ़ जाती है।

### राष्ट्रीय एकता का महत्त्व

राष्ट्रीय एकता किसी भी देश की प्रगति, सुरक्षा और अखंडता की आधारशिला है। जब देश के नागरिक एकजुट होते हैं, तो कोई भी बाहरी शक्ति देश को कमजोर नहीं कर सकती। राष्ट्रीय एकता से देश में शांति और सद्भाव का वातावरण बनता है, जो आर्थिक विकास के लिए अनिवार्य है। एक संगठित राष्ट्र ही शिक्षा, स्वास्थ्य, विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में प्रगति कर सकता है।

### राष्ट्रीय एकता के मार्ग में बाधाएँ

आज हमारी राष्ट्रीय एकता के मार्ग में अनेक बाधाएँ हैं। सांप्रदायिकता, जातिवाद, क्षेत्रवाद और भाषावाद जैसी विघटनकारी शक्तियाँ देश को कमजोर करने का प्रयास कर रही हैं। कुछ स्वार्थी राजनेता अपने राजनीतिक लाभ के लिए लोगों की भावनाओं को भड़काकर समाज को बाँटने का काम करते हैं। इसके अतिरिक्त, गरीबी, अशिक्षा और बेरोजगारी भी इन विघटनकारी शक्तियों को बल प्रदान करती हैं।

### राष्ट्रीय एकता बनाए रखने के उपाय

राष्ट्रीय एकता को बनाए रखने के लिए हमें सभी धर्मों और संस्कृतियों का सम्मान करना सीखना होगा। शिक्षा के माध्यम से बच्चों में बचपन से ही राष्ट्रीयता और सर्वधर्म समभाव के संस्कार डालने होंगे। सरकार को भी निष्पक्षता से कार्य करना चाहिए और देश को तोड़ने वाली शक्तियों के विरुद्ध कठोर कार्यवाही करनी चाहिए। राष्ट्रीय पर्वों को मिल-जुलकर मनाना भी राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देता है।

### उपसंहार

"एकता में ही बल है" - यह कहावत हमारे देश के लिए सर्वथा उपयुक्त है। हमें यह याद रखना होगा कि हम पहले भारतीय हैं, और बाद में हिन्दू, मुस्लिम, सिख या ईसाई। जब तक हम सब मिलकर देश की प्रगति के लिए कार्य नहीं करेंगे, तब तक भारत एक विकसित और शक्तिशाली राष्ट्र नहीं बन सकता। अतः, राष्ट्रीय एकता वर्तमान समय की सबसे बड़ी और अनिवार्य आवश्यकता है।

### Quick Tip

निबंध में 'विविधता में एकता' (Unity in Diversity) के सिद्धांत को आधार बनाएं। राष्ट्रीय एकता के मार्ग में आने वाली बाधाओं (जैसे- सांप्रदायिकता, जातिवाद) का उल्लेख करते हुए उनके समाधान के व्यावहारिक उपाय सुझाएं।

#### 14. (iv). पर्यावरण संरक्षण का महत्त्व

##### Solution:

##### प्रस्तावना

पर्यावरण का अर्थ है हमारे चारों ओर का आवरण, जिसमें वायु, जल, भूमि, पेड़-पौधे और जीव-जंतु शामिल हैं। एक स्वस्थ जीवन के लिए स्वच्छ पर्यावरण का होना अनिवार्य है। परन्तु, आधुनिक मानव ने अपनी स्वार्थपूर्ति और विकास की अंधी दौड़ में पर्यावरण को इतना दूषित कर दिया है कि आज सम्पूर्ण मानव जाति का अस्तित्व ही खतरे में पड़ गया है। अतः, पर्यावरण संरक्षण आज के समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है।

##### पर्यावरण प्रदूषण के कारण और प्रभाव

औद्योगिक क्रांति के बाद से ही पर्यावरण का संतुलन बिगड़ना शुरू हो गया। कारखानों और वाहनों से निकलने वाले धुएँ ने वायु को प्रदूषित कर दिया। शहरों के गंदे नालों और कारखानों के रासायनिक कचरे को नदियों में बहाने से जल प्रदूषित हो गया। वनों की अंधाधुंध कटाई से भूमि का क्षरण बढ़ा और वन्यजीवों का अस्तित्व संकट में आ गया। इस प्रदूषण के कारण आज अम्ल वर्षा, ओजोन परत का क्षरण, ग्लोबल वार्मिंग और नई-नई बीमारियाँ उत्पन्न हो रही हैं।

##### पर्यावरण संरक्षण का महत्त्व

पर्यावरण का संरक्षण केवल पेड़-पौधों या जीव-जंतुओं को बचाने के लिए ही नहीं, बल्कि स्वयं मानव के अस्तित्व को बचाने के लिए भी आवश्यक है। स्वच्छ वायु हमें साँस लेने के लिए ऑक्सीजन देती है, स्वच्छ जल हमारी प्यास बुझाता है और उपजाऊ भूमि हमें भोजन प्रदान करती है। यदि पर्यावरण का संतुलन बिगड़ गया, तो पृथ्वी पर जीवन असंभव हो जाएगा। पर्यावरण संरक्षण हमारी भावी पीढ़ियों के प्रति हमारा नैतिक दायित्व भी है।

##### संरक्षण के उपाय

पर्यावरण को बचाने के लिए हमें व्यक्तिगत और सामूहिक, दोनों स्तरों पर प्रयास करने होंगे। हमें अधिक से अधिक पेड़ लगाने चाहिए। जल के स्रोतों को दूषित होने से बचाना चाहिए। प्लास्टिक के प्रयोग को बंद करना होगा। ऊर्जा के नवीकरणीय स्रोतों जैसे- सौर ऊर्जा और पवन ऊर्जा को अपनाना होगा। सरकार को भी पर्यावरण संबंधी कानूनों का कड़ाई से पालन करवाना चाहिए और लोगों में जागरूकता फैलानी चाहिए।

##### उपसंहार

प्रकृति हमें जीवन देती है, उसका सम्मान करना हमारा कर्तव्य है। यदि हम अब भी सचेत नहीं हुए तो वह दिन दूर नहीं जब हमें इसके विनाशकारी परिणाम भुगतने होंगे। आइए, हम सब मिलकर यह संकल्प लें कि हम अपने पर्यावरण को स्वच्छ और हरा-भरा बनाएँगे, क्योंकि एक स्वच्छ पर्यावरण ही एक स्वस्थ राष्ट्र का आधार है।

### Quick Tip

पर्यावरण पर निबंध लिखते समय, प्रदूषण के विभिन्न प्रकारों (वायु, जल, ध्वनि) का उल्लेख करें। 'चिपको आंदोलन' जैसे पर्यावरण आंदोलनों का उदाहरण भी दे सकते हैं। अपने सुझावों को व्यावहारिक और ठोस रखें।

## 14. (v). विज्ञान वरदान है या अभिशाप

### Solution:

#### प्रस्तावना

आज का युग विज्ञान का युग है। हमारे जीवन का कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं है जो विज्ञान से प्रभावित न हो। सुबह के अलार्म से लेकर रात के बल्ब तक, सब कुछ विज्ञान की ही देन है। विज्ञान ने मानव जीवन को अत्यंत सरल, सुखद और समृद्ध बना दिया है। लेकिन, सिक्के के दो पहलुओं की तरह विज्ञान के भी दो पक्ष हैं - एक वरदान का, तो दूसरा अभिशाप का। विज्ञान का उपयोग कैसे किया जाता है, यही उसे वरदान या अभिशाप बनाता है।

#### विज्ञान एक वरदान के रूप में

विज्ञान ने मानव को अनेक वरदान दिए हैं। चिकित्सा के क्षेत्र में नई-नई दवाओं और तकनीकों ने असाध्य रोगों पर विजय प्राप्त कर ली है। यातायात और संचार के साधनों (टेलीफोन, मोबाइल, इंटरनेट) ने दुनिया को एक छोटा सा गाँव बना दिया है। बिजली के आविष्कार ने हमारे जीवन से अंधकार को मिटा दिया है। कृषि के क्षेत्र में वैज्ञानिक उपकरणों और उन्नत बीजों ने खाद्य उत्पादन में क्रांति ला दी है। मनोरंजन से लेकर शिक्षा तक, हर क्षेत्र में विज्ञान हमारे लिए एक वरदान सिद्ध हुआ है।

#### विज्ञान एक अभिशाप के रूप में

जब विज्ञान का दुरुपयोग होता है, तो यह अभिशाप बन जाता है। परमाणु बम, हाइड्रोजन बम जैसे विनाशकारी हथियारों का निर्माण विज्ञान का ही भयावह रूप है, जो पल भर में सम्पूर्ण मानवता का विनाश कर सकते हैं। बड़े-बड़े उद्योगों ने पर्यावरण को प्रदूषित कर दिया है, जिससे ग्लोबल वार्मिंग जैसी समस्याएँ उत्पन्न हो गई हैं। मोबाइल और इंटरनेट के अत्यधिक प्रयोग ने युवाओं को शारीरिक और मानसिक रूप से कमजोर बना दिया है। विज्ञान ने मनुष्य को मशीनों का दास बना दिया है।

#### निष्कर्ष (उपसंहार)

वास्तव में, विज्ञान न तो वरदान है और न ही अभिशाप। यह एक शक्ति है, जिसका उपयोग अच्छे और बुरे, दोनों कामों के लिए किया जा सकता है। यह चाकू की तरह है, जिससे फल भी काटे जा सकते हैं और किसी की हत्या भी की जा सकती है। दोष चाकू का नहीं, बल्कि उसके प्रयोग करने वाले का है। यदि मानव विज्ञान का उपयोग मानवता के कल्याण के लिए करे, तो यह वरदान है। परन्तु, यदि इसका उपयोग विनाश के लिए किया जाए, तो इससे बड़ा कोई अभिशाप नहीं है। अतः, आवश्यकता इस बात की है कि हम विज्ञान पर विवेक का अंकुश रखें।

### Quick Tip

इस प्रकार के 'पक्ष-विपक्ष' वाले निबंधों में, दोनों पक्षों (वरदान और अभिशाप) का संतुलित वर्णन करें। अंत में एक निष्पक्ष निष्कर्ष दें, जिसमें यह स्पष्ट हो कि समस्या वस्तु में नहीं, बल्कि उसके उपयोग में है।

---